आरात्रिक-भजन

और

श्रीश्रीरामकृष्ण-सारदानामामृतम्

(अनुवाद, स्वरलिपि, स्तोत्र, ध्यान और १६
भजनगान के साथ)

★

[श्री श्री ठाकुर और श्री श्री मां प्रत्येक के जीवन
की १०८ वैशिष्ट्यपूर्ण घटनाओं का अवलम्बन
करते हुए नित्य-पाठोपयोगी
"नामामृतम्"]

★

रामकृष्ण-शिवानन्द आश्रम,
बारासत, (२४ परगना)

प्रकाशक :
सम्पादक : रामकृष्ण–शिवानन्द आश्रम
पो० वारासत, जिला २४ परगना

प्रकाशक द्वारा सर्वाधिकार संरक्षित

उपस्थापक–स्वामी अपूर्वानन्द

यह पुस्तक वारासत रामकृष्ण-शिवानन्द आश्रम
के श्री श्री ठाकुर की सेवा में उत्सर्गीकृत है।

हिन्दी संस्करण प्रथम प्रकाशन मई, १९७६

मुद्रक :
विकास प्रेस, पाण्डे हवेली
वाराणसी-१ (उ० प्र०)

पुनर्मुद्रण व्यय १-५० रु०

प्रकाशक का निवेदन

श्रीश्री ठाकुर तथा श्रीश्री माँ की असीम कृपा से "श्रीश्री रामकृष्ण-शारदानामामृतम्" हिन्दी में प्रकाशित हुआ है। बहुत से भक्तों और रचयिताओं के हार्दिक आग्रह ने हमें इस दुरूह कार्य के लिए प्रेरित किया है। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि अब यह पुस्तक सारे भारत के भक्तों और जिज्ञासुओं, नर-नारियों की माँगों की पूर्ति करते हुए उन्हें पूर्ण सन्तोष और शान्ति या यों कहें कि हृदय में आत्म-तृप्ति प्रदान करेगी।

प्रार्थना, प्रणाम, सपार्षद-श्रीरामकृष्ण-वन्दना, श्रीश्रीरामकृष्ण-नामामृत, नामामृत-माहात्म आदि पूरे पाँच अध्याय इस पुस्तक में हैं। विशुद्ध स्वर, ताल और लय में गाने की सुविधा के लिए सारे नामामृत की स्वरलिपि भी इसमें दी गई हैं। 'श्रीरामकृष्णाष्टोत्तर-शतनामस्तोत्रम्' (अनुवाद के साथ) इस ग्रन्थ में संगृहीत हुआ है, जिससे ग्रन्थ की उपयोगिता और बढ़ गई है।

श्रीश्रीशारदानवकम्, देवी-ध्यानम्, श्रीमत्याः शारदादेव्याः स्तोत्रम्, श्रीश्रीशारदानामामृतम्, मातृ-प्रशस्तिः देवी-स्तुतिः, देवी-अभ्यर्थनम्—इन सात अध्यायों में 'श्रीश्रीशारदानामामृतम्' संस्कृत में रचित हुआ है। प्रत्येक अध्याय में अनुवाद और स्वर-लिपि दी गयी है। श्रीश्रीरामकृष्ण-देव का ध्यान और श्रीश्रीशारदा-देवी का ध्यान संगृहीत हो जाने से यह ग्रन्थ सर्वांगसुन्दर प्रार्थना और वन्दना ग्रन्थ के रूप में रूपायित हो गया है।

'श्रीश्रीरामकृष्णनामामृत' मुख्यतः स्वामि-विवेकानन्द-रचित स्तोत्र आदि से गृहीत प्रधान-प्रधान १०८ नामों में रचित हुआ है। इस

तरह 'श्रीश्रीशारदानामामृतम्' भी श्रीश्रीशारदा-देवी के जन्म से स्वरूप में लीन होने तक की १०८ विशिष्ट घटनाओं के अवलम्बन से रचित हुआ है। जिन भक्तों को श्रीश्रीठाकुर और श्रीश्री माँ की विस्तृत जीवनी पाठ करने का अवकाश नहीं मिलता उन्हें इन दो नामामृतों का पाठ करने से ही जीवनी-पाठ का पूर्ण-फल प्राप्त होगा। ग्रन्थ के परिशिष्ट में लिखित श्रीश्री ठाकुर और श्रीश्री माँ विषयक १९ गान भी पाठकों के हृदय में भक्ति-रस का संचार कर उन्हें आह्लादित करेंगे।

'श्रीश्रीरामकृष्ण-शारदानामामृतम्' पुस्तक के विभिन्न रचयिताओं को हमारा हार्दिक धन्यवाद! श्रीमत्स्वामी अभेदानन्दजी महाराज-रचित ध्यान और स्तोत्र आदि प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान करने के कारण हम श्रीरामकृष्ण-वेदान्त-मठ के प्रति कृतज्ञता प्रगट करते हैं। स्वामिविवेकानन्द-रचित श्रीश्रीरामकृष्ण-आरात्रिक, श्रीश्री-रामकृष्णस्तोत्रम (तीन), श्रीश्रीरामकृष्ण-प्रणाम—इन सबको छापने की अनुमति देने के लिए हम कलकत्ता-विवेकानन्द-सोसाइटी के कर्तृ-पक्ष के बहुत आभारी हैं। इसके अतिरिक्त भजन-गान के रचयिताओं के प्रति भी हम बहुत कृतज्ञ हैं। इस ग्रन्थ के प्रकाशन में अन्य अनेक लोगों से हमें अकुण्ठ सहयोगिता और सहायता मिली है। अतएव उन सभी ने हमें कृतार्थ किया है।

नित्य पाठोपयोगी 'श्रीश्रीरामकृष्ण-शारदानामामृतम्' एक अनुपम भक्ति-रसात्मक वन्दना-ग्रन्थ है। इस पुस्तक को बारासत के श्रीरामकृष्ण-शिवानन्द-आश्रम के श्रीठाकुर की सेवा में उत्सर्ग करने के लिए उपस्थापक महोदय को हम हार्दिक धन्यवाद देते हैं। श्रीरामकृष्ण-भक्त-मण्डली के हाथ में इस ग्रन्थ को अर्पित करने का सुयोग मिला है इसके लिए हम अपने को धन्य मानते हैं। इति

३० जून, १९७९ प्रकाशक

निवेदन

'श्रीश्रीरामकृष्णनामामृतम्' और 'श्रीश्रीशारदानामामृतम्' अनुवाद, स्वरलिपि और श्रीरामकृष्णदेव की आरती, श्रीरामकृष्ण-स्तोत्र, प्रणाम और अडारह भजन-गान समेत 'श्रीश्रीरामकृष्ण-शारदानामामृतम्' इस युगल नाम से प्रकाशित हुआ है। स्वामी-विवेकानन्दजी की शतवार्षिकी के उपलक्ष में स्वामिजी-रचित स्तोत्र आदि से संगृहीत श्रीश्रीठाकुर के १०८ नामों की सहायता से प्रो० टी० ए०, भण्डारकर, एम० ए०, साहित्याचार्य महोदय (वाराणसी) ने संस्कृत भाषा में "श्रीश्रीरामकृष्णाष्टोत्तर-शतनामस्तोत्रम्" नाम से जिस स्तोत्र की रचना की है उस स्तोत्र को अनुवाद के साथ इस ग्रन्थ में संगृहीत किया गया है। उस स्तोत्र की सहायता से प्रो० डा० ए० सी० भट्टाचार्य महोदय (गवर्नमेंण्ट-कालेज, ज्ञानपुर, वाराणसी) ने श्रीरामकृष्णनामामृत की रचना की है। उसमें श्रीमदभेदानन्द-स्वामी-विरचित श्रीरामकृष्णाष्टक-स्तोत्र श्रीरामकृष्ण-वेदान्त मठ की अनुमति से स्वर और ताल का सयोजन करते हुए दिया गया है। इस पुस्तक में संगृहीत 'परम-ईश्वर युग-ईश्वर' इत्यादि भजन-गान, सपार्षद-श्रीरामकृष्ण-वन्दना तथा श्रीरामकृष्ण-नामामृत-महात्म्य इत्यादि के रचयिता भी डा०ए०सी० भट्टाचार्य जी हैं।

श्रीशारदादेवी के जीवन की १०८ विशेष घटनाओं का अवलम्बन करके प्रो. टी.ए. भण्डारकर, एम.ए., साहित्याचार्य महोदय (वाराणसी) ने माँ शारदा की जन्म-शताब्दी के उपलक्ष में 'श्रीश्रीशारदानामामृतम्' ग्रन्थ संस्कृत में लिखा। इस पुस्तक में संगृहीत 'श्रीशारदाष्टकम्' के भी रचयिता प्रो० भण्डारकर महोदय ही हैं। वेदान्तमठ की अनुमति से श्रीमदभेदानन्द-स्वामी विरचित श्रीमत्याः शारदादेव्याः स्तोत्रम्' इस पुस्तक में संयोजित हुआ है और श्रीचण्डी से लिया गया है देवि-स्तुतिः (नमो देव्यै

महादेव्यै—इत्यादि ९ श्लोक) तथा 'देवि-अभ्यर्थनम्' (सर्वभूता यदा देवी से शरणागतदीनार्त्त·····नारायणि नमोऽस्तु ते-पर्यन्त)।

संस्कृत भाषा में रचित 'श्रीश्रीशारदानामामृतम्' का बंगानुवाद किया है श्रीगोपालचन्द्र-वेदान्तशास्त्री महोदयने । इस पुस्तिका के संकलन में उनकी मूल्यवान् सहयोगिता के लिए हम हृदय से उनके प्रति कृतज्ञ हैं।

विशुद्ध स्वर, ताल और लय में गाने की सुविधा के लिए दोनों नामामृतों की ही पूरी स्वर-लिपि भी दी गई है। परवर्ती संस्करण छापने की विशेष विवेचना करके कुछ मुद्रण-व्यय रखा गया है।

परिशिष्ट में स्वामी विवेकानन्द रचित आरात्रिक, श्रीरामकृष्ण-स्तोत्रम् (३) तथा प्रणाम-मन्त्र और हिन्दी में रचित दस श्रीरामकृष्ण विषयक और नौ श्री माँ शारदा विषयक इस प्रकार कुल १९ भजन-गानों को रचयिता की अनुमति से संयोजित किया गया है। हिन्दी भजन छापने का यह हमारा प्रथम प्रयास है। इन भजनों में कुछ मौलिक हैं तथा कुछ अनूदित हैं। 'श्रीश्रीरामकृष्ण-शारदानामामृतम्' को पूर्ण नित्य पाठोपयोगी बन्दना-ग्रन्थ रूप से प्रकाशित करने के लिए हमलोगों ने सब प्रकार से प्रयास किया। हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि इस ग्रन्थ के पाठ के समय श्रीश्रीरामकृष्ण और श्रीश्रीशारदादेवी के प्रति पाठकों के मन में अनुराग जागृत होगा।

अनेक भक्त श्रीश्रीरामकृष्णदेव जिस भाषा में बातचीत करते थे उस भाषा को देवभाषा समझ कर और बंगला गाना सुनना पसन्द करते हैं, इस कारण इस ग्रन्थ में प्रकाशित "श्रीश्रीरामकृष्णनामामृतम्" में बंगला अंशों को उनके मूल-रूप में ही (केवल देवनागरी लिपि में) रखा गया है।

इति

विनीत उपस्थापक

श्री रामकृष्णदेवजी का ध्यान *

हृदयकमलमध्ये राजितं निर्विकल्पं,
सदसदखिल-भेदातीतमेकस्वरूपम्
प्रकृतिविकृतिशून्यं नित्यमानन्दमूर्तिम्,
विमल-परमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥ १ ॥

निरुपममतिसूक्ष्मं निष्प्रपंचं निरीहं,
गगनसदृशमीशं सर्वभूताधिवासम् ।
त्रिगुणरहितसच्चिद् ब्रह्मरूपं वरेण्यं,
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥ २ ॥

हृदय-कमल में विराजित, द्वन्द्वातीत, सत् असत् इत्यादि समस्त भेदों से परे अवस्थित, एक ही स्वरूप में रहनेवाले, प्रकृति-जन्य विकारों से रहित, नित्य ही आनन्दमय मूर्तिवाले, निर्मल परमहंस स्वरूप प्राप्त किये हुये श्रीरामकृष्ण देवजी का हम भजन करते हैं ॥१॥

जिनका इस संसार में कोई भी दृष्टान्त देने का नहीं है, अत्यन्त सूक्ष्म स्वरूप वाले, प्रपञ्चरहित, कामना से शून्य, आकाश के समान सर्वव्यापक, सर्वभूतों में रहनेवाले ईश्वर, सत्त्वादिगुणत्रयों से रहित, चैतन्य विशिष्ट ब्रह्मस्वरूप, पूजनीय, निर्मल परमहंसस्वरूप प्राप्त किये हुये श्रीरामकृष्णदेवजी का हम भजन करते हैं ॥२॥

---

* श्रीमत्स्वामी अभेदानन्द विरचित यह ध्यान श्रीरामकृष्ण वेदान्तमठ प्रकाशित नित्यपूजाविधि ग्रन्थ से गृहीत है ।

वितरितुमवतीर्णं ज्ञानभक्तिप्रशान्तिः,
प्रणयगलितचित्तं जीवदुःखासहिष्णुम्, ।
धृतसहजसमाधिं चिन्मयं कोमलांगम्,
विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः ॥ ३ ॥

प्रार्थना

केदारा—झाँपताल

विश्वस्य धाता पुरुषस्त्वमाद्यो
अव्यक्तरूपेण ततं त्वयेदम् ।
हे रामकृष्ण ! त्वयि भक्तिहीने,
कृपा-कटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥ १ ॥

इस संसार में ज्ञान, भक्ति और शमगुण वितरण करने के लिये अवतार ग्रहण किये हुये, प्रेम से जिनका चित्त गल गया है, जीवों के दुःख को सहन कर सकने में असमर्थ, स्वाभाविकरूप से समाधि ग्रहण करनेवाले, ज्ञानमय, कोमल अंगवाले, निर्मल परम हंसस्वरूप प्राप्त किये हुये श्रीरामकृष्णदेवजी का हम भजन करते हैं ॥३॥

हे रामकृष्ण देव ! तुम विश्व के विधानकर्त्ता आदि पुरुष हो, तुमने अव्यक्तरूप से इस संसार का विस्तार किया, तुम्हारे प्रति भक्तिहीन मेरे प्रति सर्वदा के लिये कृपादृष्टि कीजिये ॥१॥ (या करो)

त्वं पासि विश्वं सृजसि त्वमेव,
त्वमादिदेवं विनिहंसि सर्वम् ।
हे रामकृष्ण ! त्वयि भक्तिहीने,
कृपा-कटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥ २ ॥
मायां समाश्रित्य करोषि लीलां,
भक्तान् समुद्धर्तुमनन्तमूर्तिः ।
हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने,
कृपा-कटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥ ३ ॥
विधृत्य रूपं नरवत्त्वया वै,
विज्ञापितो धर्म इहातिगुह्यः ।
हे रामकृष्ण ! त्वयि भक्तिहीने,
कृपा-कटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥ ४ ॥

हे आदिदेव ! श्रीरामकृष्णजी ! आप इस विश्व की रक्षा करते हैं, तथा उसकी सृष्टि और उसका नाश भी आप ही करते हैं । आपके प्रति भक्तिहीन मेरे प्रति सदा के लिये कृपादृष्टि कीजिये ॥२॥

आप अनन्तमूर्तिविशिष्ट होकर भक्तों को उद्धार करने के लिये माया का आश्रय करके लीला करते हैं । हे रामकृष्णदेवजी ! आपके प्रति भक्तिहीन मेरे प्रति सदा के लिये कृपादृष्टि कीजिये ॥३॥

इस संसार में आपने नर-रूप धारण करके गुह्य धर्म का प्रकट किया । हे रामकृष्णदेवजी ! आप के प्रति भक्तिहीन मेरे प्रति आप सदा के लिये कृपादृष्टि कीजिये ॥४॥

तपोऽथ ते त्यागमदृष्टपूर्वं,
दृष्ट्वा नमस्यन्ति कथं न विज्ञाः।
हे रामकृष्ण ! त्वयि भक्तिहीने,
कृपा-कटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥ ५ ॥

श्रुत्वाऽत्र ते नाम भवन्ति भक्ताः,
दृष्ट्वा वयं तन्नतु भक्तियुक्ताः।
हे रामकृष्ण ! त्वयि भक्तिहीने,
कृपा-कटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥ ६ ॥

सत्यं विभुं शान्तमनादिरूपं,
प्रसादये त्वामजमन्तशून्यम्।
हे रामकृष्ण ! त्वयि भक्तिहीने,
कृपा-कटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥ ७ ॥

आप की अदृष्टपूर्व तपस्या और त्याग देखकर ज्ञानीलोग क्यों नहीं आपको प्रणाम करेंगे ? हे रामकृष्णदेवजी ! आपके प्रति भक्तिहीन मेरे प्रति आप सदा के लिये कृपादृष्टि कीजिये ॥५॥

आपके नाम सुनते ही लोग आपके भक्त बन जाते हैं, उसे देखकर भी हम आपके प्रति भक्तिमान् नहीं होते, लेकिन हे रामकृष्ण-देवजी ! आपके प्रति भक्तिहीन मेरे प्रति आप सदा के लिये कृपादृष्टि कीजिये ॥६॥

सत्यस्वरूप, सर्वव्यापक, शान्त तथा अनादिस्वरूप, जन्मरहित तथा अन्तरहित आपको मैं प्रसन्न करता हूँ, लेकिन हे रामकृष्णदेवजी ! आप के प्रति भक्तिहीन मुझपर आप सदा के लिये कृपादृष्टि कीजिये ॥७॥

जानामि तत्त्वं नहि देशिकेन्द्रं,
किम्वा स्वरूपं कथमेव भावम् ।
हे रामकृष्ण ! त्वयि भक्तिहीने,
कृपा-कटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥ ८ ॥

इति श्रीअभेदानन्द-स्वामिना विरचितं
श्रीरामकृष्णाष्टकम् ॥

प्रणाम

मालकौश-तेवरा

परम ईश्वर युग-ईश्वर जय रामकृष्ण ।
करुणामय वरनिर्भय देहि रामकृष्ण ॥
पुरुषोत्तम जित-काम-कांचन रामकृष्ण ।
कमलानन पतितपावन हे रामकृष्ण !
तनुसुन्दर हृदिकन्दर भाति रामकृष्ण ।
मदनमर्दन मतिवर्धन त्राहि रामकृष्ण ॥
शिवशंकर अभयंकर पाहि रामकृष्ण ।
शरणं मम हे प्रियतम ! प्रभु रामकृष्ण ॥

पूजकश्रेष्ठ आपका स्वरूप मैं नहीं जानता हूँ, या आपका स्वरूप क्या है उससे भी मैं परिचित नहीं हूँ, तो फिर आपके प्रति भक्तिभाव की बात क्या बताऊँ ? लेकिन हे रामकृष्णदेवजी ! आपके प्रति भक्तिहीन मुझपर आप सदा के लिये कृपादृष्टि कीजिये ॥८॥

स्वामी अभेदानन्द विरचित श्रीरामकृष्णाष्टक समाप्त ।

(सपार्षद श्रीरामकृष्ण)

वन्दना

(भुवनमंगल का सुर) प्रभाती-त्रिताल

जय जय रामकृष्ण वांछाकल्पतरु ।
जय जय भगवान् जगतेर गुरु ॥ १ ॥
जय जय जगदीश मंगल-निधान ।
रामकृष्णारूपे तुमि एले भगवान् ॥ २ ॥
जय जय नररूप पतितपावन ।
जय जय ब्रह्मरूपी भूभारहरण ॥ ३ ॥
जय जय नरोत्तम ब्रह्म सनातन ।
भक्तिभावे वन्दि तव रातुलचरण ॥ ४ ॥
जय जय ब्रह्मा-विष्णु-हर-रूपधारी ।
जय जय समन्वय देखाले आचारि ॥ ५ ॥
जय जय मा-सारदा जगत-जननी ।
रामकृष्ण शक्तिरूपा चैतन्यरूपिणी ॥ ६ ॥
प्रणमि तोमारे ओगो माताठाकुराणी ।
आद्याशक्ति महामाया विपदतारिणी ॥ ७॥
जय श्रीविवेकानन्द लीला-सहचर ।
अन्तरंग योगीराज करुणा-सागर ॥ ८ ॥

जय ब्रह्मानन्द जय ब्रजेर राखाल।
संघेर नायक यिनि प्रभुर दुलाल ॥ ९ ॥

जय शिवानन्द जय गुरुगत प्राण।
त्यागीवर महापुरुष मूर्तकल्याण ॥ १० ॥

जय श्रीसारदानन्द मायेर सेवक।
शान्त सौम्य धीर 'लीलाप्रसंग' लेखक ॥ ११ ॥

जय रामकृष्णानन्द निष्ठावान् यति।
प्रभुर सेवाय सदा तनु प्राण मति ॥ १२ ॥

जय योगानन्द नमि उच्च कोटीर भक्त।
त्याग-तपस्या-मातृसेवाय अनुरक्त ॥ १३ ॥

जय प्रेमानन्द मूर्तिमान् प्रेम यिनि।
श्रीमतीर अंशे जन्म श्रीप्रभुर वाणी ॥ १४ ॥

जय निरंजनानन्द नित्य निरंजन।
श्रीमुखेर वाणी ताहे नाहिक अंजन ॥ १५ ॥

जय श्रीअखंडानन्द अनाथ-शरण।
"नर नारायण" सेवा कैला प्रवर्तन ॥ १६ ॥

जय त्रिगुणातीत "उद्बोधन" सम्पादक।
प्रतीच्ये प्रथम हिन्दु-मन्दिर स्थापक ॥ १७ ॥

जय श्रीतुरीयानन्द तापस महान् ।
ज्ञानभक्ति कर्मयोग अपूर्व मिलन ॥ १८ ॥

जय श्रीअभेदानन्द ज्ञानेर भाण्डार ।
विदेशे वेदान्तवाणी करिला प्रचार ॥ १९ ॥

जय श्रीबोधानन्द अतीव सरल ।
नामे खोका भावे शिशु भकतवत्सल ॥ २० ॥

जय श्री अद्भूतानन्द अद्भुत जीवन ।
निरक्षर सुब्रह्मज्ञ प्रभुर सृजन ॥ २१ ॥

जय श्रीअद्वैतानन्द प्रवीण वयसे ।
द्वादश गैरिकदान प्रभुर आदेशे ॥ २२ ॥

जय श्रीविज्ञानानन्द प्रयागेर यति ।
प्रभुर मंदिर तरे हयेछो स्थपति ॥ २३ ॥

भक्तिभरे नमि एइ त्यागी शिष्यगणे ।
इष्टपदे मति दाओ प्रार्थना चरणे ॥ २४ ॥

जय जय दाँहाकार यत भक्तगण ।
अवनी लुटाये वन्दि सवार चरण ॥ २५ ॥

———

श्रीश्रीराम-कृष्ण नामामृत

कीर्तनमिश्र-द्रुतकवाली

गयाधामे क्षुदिराम स्वप्नयोगे जानि।
'गदाधर' (१) नाम पुत्रे दिलेन आपनि॥ १॥

हे 'गदाई' (२) बले डाके माता चन्द्रमणि।
आदुरे 'दुलाल' (३) डाके धनी कामारनी॥ २॥

स्वामीदेव बले देवी सारदा जननी।
'माता पिता भाई बन्धु' (४) सब मोर तिनि॥ ३॥

ओहे रामकृष्ण! तुमि भक्तिहीन जने।
कृपादृष्टि कर देव सदा निजगुणे॥

'सदानन्दमय' (५) तिनि 'ठाकुर' (६) आमार।
'गुरु' (७) इष्ट (८) 'आद्याशक्तिरूप' (९)
कालीमार॥ ४॥

अनन्त तोमार नाम अन्त केवा पाय।
पंचमुखे महेश्वर याँर गुण गाय॥ ५॥

लीलामय! लीला तव पूर्ण करिबारे।
वीरेश्वर महेश्वर एलो धरापरे॥ ६॥

ओहे रामकृष्ण! तुमि भक्तिहीन जने।
कृपा-दृष्टि कर देव सदा निजगुणे॥
नररूपे नरेन्द्र ये विश्वेर विवेक।
शतनामे गुण तव गाहिल अनेक॥ ७॥
ॐ (१०) ह्रीं (११) ऋतं (१२) तुमि 'ब्रह्मसनातन (१३)।
बन्धन-खण्डन-कारी (१४) नित्य (१५) निरंजन (१६)॥८॥
गुणेर अतीत (१७) तबु हओ गुणमय (१८)।
मोहेर अंकुश (१९) तुमि विगत संशय (२०)॥ ९॥
ओहे रामकृष्ण! तुमि भक्तिहीन जने।
कृपा-दृष्टि कर देव सदा निजगुणे॥
चिद्घनकाय (२१) तुमि ज्ञानेर अंजन (२२)।
दीनेर बान्धव (२३) आगो विमल नयन (२४)॥१०॥
नरवर (२५) नरदेव (२६) नवरूप-धर (२७)।
अद्भुत क्रियाशील (२८) कर्मकलेवर (२९)॥११॥
युगेर ईश्वर (३०) तुमि जगत-ईश्वर (३१)।
छिन्नकर कलि-डोर (३२) भावेर सागर (३३)॥१२॥
ओहे रामकृष्ण! तुमि भक्तिहीन जने।
कृपादृष्टि कर देव सदा निजगुणे॥

जगत-वन्दन (३४) तुमि जगत-भूषण (३५)।
जगतेर गति (३६) ओहे भक्त-शरण (३७) ॥१३॥

त्यक्त-जाति-कुलमान (३८) समदर्शी (३९) तुमि।
निर्भय (४०) करुणाघन (४१) आचण्डाल-प्रेमी (४२) ॥१४॥

महान्-तरङ्ग (४३) तुनि शक्ति-सागरेर।
प्रथित पुरुष (४४) रामकृष्ण जगतेर ॥१५॥

ओहे रामकृष्ण! तुमि भक्तिहीन जने।
कृपा-दृष्टि कर देव सदा निजगुणे ॥

अद्वयतत्वेते (४५) याँर चित्त समाहित।
ज्ञान याँर भक्ति (४६) प्रेमे सतत आवृत ॥१६॥

भज सेइ रामकृष्ण, कि करिवे शास्त्र।
संशय राक्षसेर (४७) नाशिबार अस्त्र ॥१७॥

भवरोगवैद्य (४८) तुमि कर भवपार (४९)।
तोमार काछे गोष्पदवारि (५०) ए संसार ॥१८॥

ओहे रामकृष्ण! तुमि भक्तिहीन जने।
कृपा-दृष्टिकर देव सदा निजगुणे।
उन्मत्त-प्रेमेर तुमि दुस्तर सागर।
अघदोष मुक्तकारी (५२) हे कर्मी कठोर (५३) ॥१९॥

भञ्जन करह तुमि दुःखेर गञ्जन (५४)।
प्राणार्पण (५५) करि कर जगतत्तारण (५६) ॥२०॥

निश्चयी (५७) दृढ़मन योगेर सहाय (५८)।
निन्दित-इन्द्रिय राग (५९) अति-ज्योतिर्मय (६०) ॥२१॥

ओहे रामकृष्ण ! तुमि भक्तिहीन जने।
कृपा-दृष्टि कर देव सदा निजगुणे ॥

काम-कांचन-वर्जित (६१) मन हे तोमार।
रामकृष्ण-रूपे एवे धर अवतार ॥२२॥

त्यागीवर (६२) योगीबर (६३) शिव (६४) ओ शङ्कर (६५)।
आलोकित कर तुमि हृदय-कन्दर (६६) ॥२३॥

मर्त्यामृत (६७) पद तव मरणोर्मिनाशी (६८)
ज्योतिष्केर ज्योति (६९) तुमि भञ्ज तमोराशि (७०) ॥२४॥

ओहे रामकृष्ण ! तुमि भक्तिहीन जने।
कृपा-दृष्टि कर देव सदा निजगुणे ॥

भास्कर तनु (७१) तव, नाशो गो अज्ञान।
लोकातीत (७२) हये कर लोकेर कल्याण (७३) ॥२५॥

वाक्यमन-अगोचर (७४) स्सरूप तोमार।
तबु एकमात्र तुमि वाक्यमनाधार ॥७५॥ (२६)
अचल (७६) शाश्वत (७७) शान्त (७८) सर्वव्यापी (७९) तुमि।
सर्वसाक्षी (८०) सर्वमय (८१) तुमि अन्तर्यामी (८२) ॥२७॥

ओहे रामकृष्ण! तुमि भक्तिहीन जने।
कृपा-दृष्टि कर देव सदा निजगुणे॥

सर्वदेवदेवी-रूप (८३) सर्वधर्मचारी (८४)।
सर्वसम्प्रदाय-प्रभु (८५) समन्वयकारी (८६)।

सर्वजीवे-हिते-रत (८७) पुरुष महान् (८८)।
अहेतुक कृपामूर्ति (८९) करुणा-निधान (९०) ॥२९॥

केह बले देव-देव (९१) तुमि देव-दूत (९२)।
तोमार विचित्र लीला बड़इ अद्भुत ॥३०॥

ओहे रामकृष्ण! तुमि भक्तिहीन जने।
कृपा-दृष्टि कर देव सदा निजगुणे॥

स्वयं बलेछ तुमि पूर्ण अवतार (९३)।
भक्तवांछा पूर्णकारी (९४) परम उदार (९५) ॥३१॥

वेदान्तेर भाष्य (९६) तुमि अति सुनिर्मल।
वेदमूर्ति (९७) ह'ये तुमि नाश कलिमल (९८) ॥३२॥

भक्तार्चित पद (९९) तव भव भेदहारी (१००)
त्रेताय से रामरूप (१०१) अवध-विहारी ॥३३॥
ओहे रामकृष्ण ! तुमि भक्तिहीन जने ।
कृपा-दृष्टि कर देव सदा निजगुणे ॥
द्वापरेते व्रजधामे कृष्ण (१०२) घनश्याम (१०३) ।
नवद्वीपे नियेछिले श्रीचैतन्य नाम (१०४) ॥३४॥
रामकृष्ण (१०५) नाम प्रभु धरिले एबार ।
उछलिया पड़े नामे मधुर भाण्डार ॥३५॥
मनभृङ्ग मत्त हये कर मधु पान ।
भवरोग दूरे यावे जुड़ावे पराण ॥३६॥
ओहे रामकृष्ण ! तुमि भक्तिहीन जने ।
कृपा-दृष्टि कर देव सदा निजगुणे ॥

केदारा त्रिताल

धर्मेर स्थापक (१०६) यिनि, अवतार-शिरोमणि (१०७),
सेइ रामकृष्ण भगवान् (आ–हा)
सेइ रामकृष्ण भगवान् ॥
मूर्तिमान् सर्व-धर्म (१०८), के बुझिवे तव मर्म,
दीने कर कृपा कणा दान । (ओ–गो)
दीने कर कृपा-कणा दान ॥

भक्तवांछा-पूर्णकारी, तुमि नररूपधारी,
गोलोक-विहारी नारायण। (ओ–हे)
गोलोक-विहारी नारायण॥

नाहि चाहि भुक्ति मुक्ति, पादपद्मे शुद्धा भक्ति,
दीने कर कृपा-कणा दान। (ओ–गो)
दीने कर कृपा-कणा दान॥

केह बले तुमि ज्ञानी, केह भक्त-चूड़ामणि,
योगी कर्मी तुमि भगवान्। (ओ–गो)
योगी कर्मी तुमि भगवान॥

वैष्णव अथवा शाक्त, हरि किम्बा कालीभक्त,
दीने कर कृपा-कणा दान। (ओ–गो)
दीने कर कृपा-कणा दान॥

रामकृष्ण रामकृष्ण, येइ राम सेइ कृष्ण,
देववन्द्य ओहे भगवान्। (तुमि)
देववन्द्य ओहे भगवान्॥

आमि जानि तुमि मोर, ओहे प्रेमी मनोचोर,
दीने कर कृपा-कणा दान। (ओ-गो)
दीने कर कृपा-कणा दान॥

(यह संगीत को बार-बार गाना चाहिए)

श्री-श्री-रामकृष्ण-नामामृत-माहात्म्य

(भवभय भञ्जन का सुर) गौड़सारङ्ग-मिश्र-त्रिताली

अष्टोत्तर-शतनाम करिले कीर्तन।
रामकृष्ण-कृपा-भागी हवे सेइ जन॥
शोन रे अबोध मन ठाकुरेर कथा।
निजमुखे बलेछेन ना हय अन्यथा॥
ये करे आमार नाम स्मरण कीर्तन।
अभ्युदय श्रेयोलाभ ना करि साधन॥
पितार ऐश्वर्य-लाभ पुत्रेर येमति।
मोर नाम ये करिवे पावे से तेमति॥
विवेक वैराग्य ज्ञान भक्ति प्रेम आदि।
परम ऐश्वर्य ताँर अपूर्व समाधि॥
भुक्ति मुक्ति ये चाय पावे से निश्चय।
भज रामकृष्ण-नाम काल बये याय॥
अमृतेर पुत्र तुमि अमृतत्व फल।
लभिये करह निज जीवन सफल॥
अखण्ड सच्चिदानन्द सेइ तो एबार।
रामकृष्ण-रूप धरे पूर्ण अवतार॥

आरो एक शुन मन ठाकुरेर कथा ।
श्रीमुखेर वाक्य कभु हवे ना गो वृथा ॥
"नाम नामी एक" जेनो भेद किछु नाइ ।
नामगुणे भव नदी तरिवे सवाइ ॥
हृदे रामकृष्ण ध्यान मुखे नाम गान ।
पलके टुटिये यावे मनेर अज्ञान ॥
मधुमय रामकृष्ण-नाम-संकीर्तन ।
अथवा पावन नाम करगो श्रवण ॥
नामेर एमनि गुण ब्रह्म सारात्सार ।
रामकृष्ण नाम करे भवसिन्धुपार ॥
कथामृत पान आर रामकृष्ण नाम ।
भवरोग दूरे यावे, हवे पूर्णकाम ॥

प्रणाम

स्थापकाय च धर्मस्य सर्वधर्मस्वरूपिणे ।
अवतार वरिष्ठाय रामकृष्णाय ते नमः ॥

श्रीश्रीरामकृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

जयतु जयतु वांछाकल्पशाखी सशिष्यः,
स जयतु भगवान् यः, सद्गुरुर्रामकृष्णः ।

जयतु च जननी श्रीसारदा भक्तिदात्री,
विमलचरणरेणुं, दीनभक्तः प्रयाचे ॥१॥

१। त्रितापनाशको देवः, पुनः पतितपावनः।
ब्रह्मा-विष्णुमहेशस्त्वं, निर्गुणोऽसि निरंजनः ॥२॥

२। लोकं विलोक्य सकलं कामार्थतमसावृतम्।
उदितस्त्वं समुद्धर्तुं तरुणारुणसारथिः ॥३॥

३। पुत्ररूपेणावतीर्य, क्षुदिरामगृहेऽकरोः।
जगत्कल्याणसिद्धचर्थं, सर्वधर्मसमन्वयम् ॥४॥

वांछाकल्पतरु भगवान् की जय हो, पार्षदों के साथ भगवान् रामकृष्णजी की जय हो, भक्ति को देनेवाली जननी श्रीसारदा देवी की जय हो, मैं दीनभक्त हूँ, सबकी पवित्र चरणधूल मैं लाभ करने का इच्छुक हूँ ॥१॥

हे भगवन्! आप आध्यात्मिक, आधिदैविक आधिभौतिक इन तीन दुःख को दूर करने में समर्थ हैं और आप पतित पावन हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश्वर भी आप ही हैं। आप सगुण और निरञ्जन भी हैं ॥२॥

सारे संसार को कामकांचन के मोहरूप अन्धेरा में डूबते हुये देखकर उसका उद्धार करने के लिये आप नवीन सूरज के रूप में उदित हुये हैं ॥३॥

क्षुदिराम चट्टोपाध्याय के घर में अवतीर्ण होकर संसार के कल्याण के लिये आपने सारे धर्मों का समन्वय किया ॥४॥

४। रामकृष्ण ! कृपासिन्धो ! शरणागतवत्सल ।
देहि दीने भक्तिहीने, नित्यं दास्यमेति प्रभो ॥५॥

१। मतानुसारं पन्थाप्न' स्तत्वं नवमिदं पुनः ।
स्वयमाचरता येन धर्मद्वन्द्वं विनाशितम् ॥६॥

२। भक्तेर्ज्ञानस्य योगस्य कर्मणश्च समन्वयात् ।
कृतं नृहरिणा येन ससम्भवमसम्भवम् ॥७॥

१
३। जनकेन गयास्वप्नाद् 'गदाधर' इतीरितः ।
२ ३
चन्द्रदेव्या 'गदाई' ति' 'दुलाले'त्यब्रवीद्धनी ॥८॥

हे रामकृष्ण ! हे कृपासिन्धो ! हे शरणागतवत्सल ! हे प्रभो ! आप भक्तिहीन इस दीन को सदा के लिये दास्यमति प्रदान करें ॥५॥

'जितने मत हैं' उतने ही पथ हैं' इस नवीन तत्त्व का स्वयं आचरण करके आपने धर्मद्वन्द्व का विनाश किया ॥६॥

जिन मनुष्यरूपी भगवान् ने भक्ति, ज्ञान, योग और कर्मों का समन्वय साधन किया, उन्होंने असम्भव को भी सम्भव करके दिखाया ॥७॥

पिताजी ने गयाधाम में स्वप्न देखकर पुत्र का नाम 'गदाधर' रखा था। माता चन्द्रदेवी पुत्र को 'गदाई' करके पुकारती थी और धाई माँ उन्हें 'दुलाल' नाम से पुकारती थी ॥८॥

जयतु च जननी श्रीसारदा भक्तिदात्री,
विमलचरणरेणुं, दीनभक्तः प्रयाचे ॥१॥

१। त्रितापनाशको देवः, पुनः पतितपावनः।
ब्रह्मा-विष्णुमहेशस्त्वं, निर्गुणोऽसि निरंजनः ॥२॥

२। लोकं विलोक्य सकलं कामार्थतमसावृतम्।
उदितस्त्वं समुद्धर्तुं तरुणारुणसारथिः ॥३॥

३। पुत्ररूपेणावतीर्य, क्षुदिरामगृहेऽकरोः।
जगत्कल्याणसिद्धयर्थं, सर्वधर्मसमन्वयम् ॥४॥

वांछाकल्पतरु भगवान् की जय हो, पार्षदों के साथ भगवान् रामकृष्णाजी की जय हो, भक्ति को देनेवाली जननी श्रीसारदा देवी की जय हो, मैं दीनभक्त हूँ, सबकी पवित्र चरणधूल मैं लाभ करने का इच्छुक हूँ ॥१॥

हे भगवन्! आप आध्यात्मिक, आधिदैविक आधिभौतिक इन तीन दुःख को दूर करने में समर्थ हैं और आप पतित पावन हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश्वर भी आप ही हैं। आप सगुण और निरञ्जन भी हैं ॥२॥

सारे संसार को कामकांचन के मोहरूप अन्धेरा में डूबते हुये देखकर उसका उद्धार करने के लिये आप नवीन सूरज के रूप में उदित हुये हैं ॥३॥

क्षुदिराम चट्टोपाध्याय के घर में अवतीर्ण होकर संसार के कल्याण के लिये आपने सारे धर्मों का समन्वय किया ॥४॥

४। रामकृष्ण ! कृपासिन्धो ! शरणागतवत्सल ।
देहि दीने भक्तिहीने, नित्यं दास्यमतिं प्रभो ॥५॥

१। मतानुसारं पन्थाप्न' स्तत्वं नवमिदं पुनः ।
स्वयमाचरता येन धर्मद्वन्द्वं विनाशितम् ॥६॥

२। भक्तेर्ज्ञानस्य योगस्य कर्मणश्च समन्वयात् ।
कृतं नूहरिणा येन ससम्भवमसम्भवम् ॥७॥

१
३। जनकेन गयास्वप्नाद् 'गदाधर' इतीरितः ।
२ ३
चन्द्रदेव्या 'गदाई' ति' 'दुलाले'त्यब्रवीद्धनी ॥८॥

हे रामकृष्ण ! हे कृपासिन्धो ! हे शरणागतवत्सल ! हे प्रभो ! आप भक्तिहीन इस दीन को सदा के लिये दास्यमति प्रदान करें ॥५॥

'जितने मत हैं' उतने ही पथ हैं' इस नवीन तत्त्व का स्वयं आचरण करके आपने धर्मद्वन्द्व का विनाश किया ॥६॥

जिन मनुष्यरूपी भगवान् ने भक्ति, ज्ञान, योग और कर्मों का समन्वय साधन किया, उन्होंने असम्भव को भी सम्भव करके दिखाया ॥७॥

पिताजी ने गयाधाम में स्वप्न देखकर पुत्र का नाम 'गदाधर' रखा था। माता चन्द्रदेवी पुत्र को 'गदाई' करके पुकारती थी और धाई माँ उन्हें 'दुलाल' नाम से पुकारती थी ॥८॥

४। रामकृष्ण ! कृपासिन्धो ! शरणागतवत्सल !
देहि दीने भक्तिहीने, नित्यं दास्यमतिं प्रभो ॥९॥

४

१। अन्नप्राशन संस्कारे रामकृष्णेति नामतः ।
तातेनाकारितः प्रेम्ना स्वयं चान्तेऽब्रवीदिदम् ॥१०॥

२। स्वामिनाऽयं विवेकेन पूजितः शतनामभिः ।
पठनाच्छ्रवणाद्वापि येषां तुष्यति मानसम् ॥११॥

५　६　७　८
३। निरंजनो निर्गुणश्च गुणाढ्यो गुणजित्प्रभुः ।
१०　११　१२　१३
देवो नरवरश्चापि नररूपधरः शिवः ॥१२॥

अन्नप्राशन के शुभ अवसर पर पिताजी ने पुत्र को प्यार से 'रामकृष्ण' नाम से पुकारा। बाद में स्वयं ही अपने को 'रामकृष्ण' कहा है ॥१०॥

स्वामी विवेकानन्दजी ने ऐसे सौ पुण्यमय नामों के द्वारा भगवान् का पूजन किया; जिन्हें पढ़ने या सुनने पर मन आनन्द से भर जाता है ॥११॥

हे भगवन् ! आप निरञ्जन, निर्गुण और गुणपूर्ण हैं तथा सत्त्व, रज, तम इन तीनों गुणों को आपने वशीभूत किया। आप नरश्रेष्ठ देवता तथा नररूपधारी हैं ॥१२॥

४। रामकृष्ण ! कृपासिन्धो ! शरणागतवत्सल ।
देहि दीने भक्तिहीने नित्यं दासमति प्रभो ॥१३॥

१४ १५ १६ १७
१। भववैद्यो दीनबन्धुर्भवभेदकरोऽचलः ।
१८ १९
गोष्पदीकृत संसार-सागरो भवतारणः ॥१४॥

२० २१ २२ २३
२। शान्तो वाङ्मनसातीतः समदृग् जगदीश्वरः ।
२४ २५ २६ २७
ॐ स्वरूपो ह्रीं-स्वरूपो निर्भरः करुणाघनः ॥१५॥

हे रामकृष्ण ! हे करुणासिन्धो ! इत्यादि ॥१३॥

आप भवरोग के वैद्य हैं, तथा दीनबन्धु, संसार दुःख के निवारक और शान्तस्वरूप हैं। आपने संसार सागर को गोष्पद-जल के समान बनाया जिससे जीवलोग अनायास उसे पार कर सकते हैं। आप संसार समुद्र के मल्लाह हैं ॥१४॥

आप शान्त, वाक्य और मन के अगोचर, समदर्शी और जगत् के ईश्वर हैं। आप निर्गुण ओंकार स्वरूप हैं तथा सगुण ह्रीं शक्तिस्वरूप हैं। आप निर्भय तथा करुणामय हैं ॥१५॥

२८ २९ ३०
३। भगवान् ज्योतिषां ज्योतिर्धर्मसंस्थापकः पुनः ।
३१ ३२
अवतारवरिष्ठोऽपि सर्वधर्मस्वरूपकः ॥१६॥

४। रामकृष्ण ! कृपासिन्धो ! शरणागतवत्सलः ।
देहि दीने भक्तिहीने नित्यं दास्यमति प्रभो ! ॥१७॥

३३ ३४ ३५
१। मर्त्यामृतं त्यक्तजातिकुलाहंधी सुनिर्मलः ।
३६ ३७
त्यागीश्वरः परित्यक्तकामकांचनभावनः ॥१८॥
३८

हे भगवन् ! आप भगवान् हैं तथा ज्योति-समूहों की ज्योति हैं और धर्म के संस्थापक भी आप ही हैं। आप अवतारों में श्रेष्ठ हैं और सर्व धर्म के स्वरूप हैं ॥१६॥

हे रामकृष्ण ! हे कृपासिन्धो इत्यादि ॥१७॥

हे भगवन् ! आप मर्त्य जीवों के लिये अमृतस्वरूप हैं, आपने जाति कुल और अहंभाव का त्याग कर दिया। आपका चित्र अत्यन्त निर्मल है। आप त्यागियों में श्रेष्ठ हैं और अपने मन से कामकांचन की भावना त्याग दी ॥१८॥

२। युगावतारो जगतां जनदुःखनिवारणः।
४० ४१
जगत्राणार्पितप्राणः कालबन्धनमोचनः ॥१९॥

४२ ४३ ४४
३। श्रीजी गुणमयश्चापि मरणोर्मिविनाशकः।
४५ ४६
ज्ञानांजनपवित्राक्षः पापदूषणनाशनः ॥२०॥

४। रामकृष्ण ! कृपासिन्धो ! शरणागतवत्सलः।
देहि दीने भक्तिहीने नित्यं दास्यमिति प्रभो ॥२१॥

हे भगवन् ! रामकृष्ण ! आप इस युग के अवतार हैं, आप इस संसार के जीवों के दुःख का निवारण करनेवाले हैं। आपने जगत् की रक्षा के लिये अपना प्राण उत्सर्ग कर दिया और आप पापरूप काल का बन्धन काटनेवाले हैं ॥१९॥

आप पूज्य हैं, आप समृद्धि और सौन्दर्य स्वरूप तथा निर्गुण होकर भी लोककल्याण के लिये गुणमय हैं। आप मृत्युरूपी लहरों का विनाश करनेवाले हैं। आपका नेत्र ज्ञानस्वरूप अंजन से पवित्र है और आप पापरूपदोषों के मोचनकारी हैं ॥२०॥

हे रामकृष्ण ! हे कृपासिन्धो इत्यादि ॥२१॥

४७ ४८
१। निन्दितेन्द्रियरागोऽपि यश्चयोगसहायवान् ।
४९ ५०
सन्देहराक्षसहन्ता भक्तार्चितपदः पुनः ॥२२॥
५१ ५१
२। सकलेष्वर्पितप्रेमा विजृम्भितयुगेश्वरः ।
५३ ५४ ५५
प्रेमरत्नाकरः पूर्णो दुःखगंजनभंजनः ॥२३॥
५६ ५७
३। कठोरकर्मकृत्सर्वदेवदेवीस्वरूपकः ।
५८ ५९ ६० ६१ ६२
वेदमूर्तिर्बहुकृत "ष्णान्तः" प्राणसखा गुरुः २४॥

हे भगवन् ! आप इन्द्रियासक्ति की निन्दा करते थे। आप योगसाधन के सहायक हैं। आप संदेहरूप राक्षस का विनाश करनेवाले हैं। भक्तलोग आपके चरणों की पूजा करते हैं ॥२२॥

आप सबको ही प्यार करते हैं, आपने सत्य, त्रेता, द्वापर तथा कलि इन चारों युगों का विस्तार किया और चारों युगों के आप ही प्रभु हैं। आप प्रेमरत्नाकर, पूर्ण और दुःख समूहों का विनाश करनेवाले हैं ॥२३॥

आपने अत्यन्त कठोर तपस्या की, आप समस्त देव-देवियों के मूर्तिमान् विग्रहधारी हैं। आप ज्ञानस्वरूप हैं। आपने बहुत से शुभकार्य किये। आपके नाम के अन्त में 'ष्ण' है, आप प्राणसखा तथा गुरु हैं ॥२४॥

४। रामकृष्ण ! कृपासिन्धो ! शरणागतवत्सल !
देहि दीने भक्तिहीने नित्यं दास्यमति प्रभो ॥२५॥

६३
१। अद्वैततत्वबोधाप्तसमाहितमनाः स्वयम् ।
६४
प्रोल्लसद्-भक्तियोगाख्य-पटावृतसुवृत्तवान् ॥२५॥

६५ ६६ ६७
२। शरणं शक्तिसिन्धूत्थ-तरंगः करुणानिधिः ।
६८ ६९ ७०
जगतामेकगम्योऽसौ नित्यं कर्मकलेवरः ॥२७॥

७१ ७२ ७३
३। मोहूंकषो मनोवाचामेकाधारस्तमोहरः ।
७४ ७५ ७६
भास्वरो भावपाथोधिर्दृढ़निश्चयमानसः ॥२८॥

हे रामकृष्ण ! हे कृपासिन्धो ! इत्यादि ॥२५॥

आपने स्वयं अद्वैत तत्वज्ञान लाभ करके समाधि ग्रहण की। आपका जीवन भक्तियोगरूप सफेद वस्त्र से आवृत है ॥२६॥

आप सब के आश्रय हैं महाशक्तिरूप समुद्र की लहरों में आप परम विकासस्वरूप हैं, आप दया की खान हैं। आप संसार के एकमात्र गति-विधायक हैं और आप लोक-कल्याण के लिये सर्वदा ही कर्मतत्पर हैं ॥२७॥

आप माया मोह के नाश करनेवाले हैं, वाक्य और मन के आप आधार हैं। आप अज्ञानान्धकार दूर करते हैं। आप स्वयं प्रकाश हैं, आप सद्भावों का सागरसमान हैं, और आपका चित्त दृढ़निश्चय सम्पन्न हैं ॥२८॥

४। रामकृष्ण ! कृपासिन्धो ! शरणागतवत्सल !
देहि दीने भक्तिहीने नित्यं दास्यमति प्रभो ! ॥२९॥

७७ ७८
१। जगद्-भूषण इत्थं चिद्घनकायस्तथा स्तुतः ।
७९ ८०
ऋतस्वरूपो भक्तानां निर्हेतुशरणं सदा ॥३०॥

८१ ८२ ८३
२। नरदेवो गुरुमहाराजो विगतसंशयः ।
८४ ८५
जगद्वन्दनयोग्यात्मा भवबन्धनखण्डनः ॥४१॥

८६ ८७
३। अहेतुः करुणामूर्तिः सुवितीक्ष्ण विशालधीः ।
८८ ८९ ९०
सर्वव्यापी साक्षिरूपो यः सनातनपुरुषः ॥३२॥

हे रामकृष्ण ! हे कृपासिन्धो ! इत्यादि ॥२९॥

आप संसार के अलङ्कारस्वरूप हैं और चैतन्यघन शरीरधारी हैं, आप सत्यस्वरूप हैं और भक्तों के अहेतुक आश्रयस्थल हैं ॥३०॥

आप मनुष्यरूप धारण किये हुये देवता हैं और हमारे गुरुदेव हैं, आप संशय से शून्य हैं, जगज्जनों के वन्दनीय तथा भवबन्धन के खण्डनकारी हैं ॥३१॥

आप अहैतुकी करुणामूर्तिवाले हैं। आप तीक्ष्ण तथा विशाल बुद्धिवाले हैं। आप सर्वव्यापी और साक्षिस्वरूप हैं। आप ही वही सनातन पुरुष हैं ॥३२॥

४। रामकृष्ण ! कृपासिन्धो ! शरणागतवत्सल !
देहि दीने भक्तिहीने नित्यं दास्यमिति प्रभो ॥३३॥

९१ ९२
१। आदर्शजीवनः सर्वसम्प्रदायाधिनायकः ।
९३ ९४ ९५
साम्य मैत्री दिव्यदूतोऽद्भूतमूर्तिरुदारधीः ॥३४॥

९६ ९७
२। नरनारीभेदशून्यो वेदान्तोज्ज्वलभाष्यभूः ।
९८ ९९
समदृक्-पण्डिताज्ञेषु मायामुग्धदयापरः ॥३५॥

१००
३। रामकृष्णस्वरूपेणावतीर्णः पुरुषो महान् ।
१०१ १०२
महासमन्वयाचार्य ख्यातः परम ईश्वरः ॥३६॥

हे रामकृष्ण ! हे कृपासिन्धो ! देत्यादि ॥३३॥

आपका जीवन मानवजातियों का आदर्शस्वरूप है। आप सारे धर्मसम्प्रदायों के अधिनायक हैं और आप साम्यमैत्री के स्वर्गीय वार्तावह हैं। आप अद्भुतमूर्ति और उदारबुद्धि वाले हैं ॥३४॥

आप स्त्री-पुरुषों में भेदशून्य हैं और आप वेदान्त के समुज्वल भाष्य हैं। आप पण्डित और मूर्खों में समदृष्टि-सम्पन्न हैं और मायामुग्ध जीवों के प्रति परमदयालु हैं ॥३५॥

आप जगत् के कल्याण के लिये 'रामकृष्ण' रूप में धरातल पर अवतीर्ण परमपुरुष हैं। आप महासमन्वयाचार्य और परमेश्वर के रूप से ख्यात हैं ॥३६॥

४। रामकृष्ण ! कृपासिन्धो ! शरणागतवत्सल !
देहि दीने भक्तिहीने नित्यं दास्यमति प्रभो ! ॥३७॥

१। प्राक् प्रत्यक् संस्कृतेरास्ते यः समन्वयरूपवान् ।
१०३ १०४
विश्वधर्म प्रकाशश्च पूज्यो लोकोत्तरः पुमान् ॥३८॥

१०५
२। वन्दितः सारदादेव्या पूर्णब्रह्मसनातनः ।
१०६ १०७ १०८
माकाली ठाकुरश्चापि यः सदानन्दपुरुषः ॥३९॥

१०९
३। 'पूर्णावतार' इत्थं यः शिष्यसन्देहशान्तये ।
११०
यो रामो यश्च कृष्णोऽभूद् रामकृष्णोऽधुनाऽब्रवीत् ।४०।

हे रामकृष्ण ! हे कृपासिन्धो ! इत्यादि ॥३७॥

आप प्राच्य और प्रतीच्य संस्कृति के समन्वयस्वरूप हैं और सार्वभौम धर्म का आचरण करके पूजनीय लोकोत्तर पुरुष के रूप में वन्दनीय हुये हैं ॥३८॥

माता सारदादेवी के द्वारा आप 'पूर्णब्रह्मसनातन' नाम से वन्दित हुये हैं और उनके द्वारा 'माँ काली' 'ठाकुर' सदानन्दमय पुरुष' के नाम से भी आप सम्बोधित हुये हैं ॥३९॥

शिष्यों के सन्देह भंजन के लिये आपने दृढ़स्वर से कहा था—"इस बार पूर्णावतार"—और जो राम हैं, जो कृष्ण हैं, वही अब रामकृष्णरूप में आविर्भूत हैं ॥४०॥

४। रामकृष्ण ! कृपासिन्धो ! शरणागतवत्सल !
देहि दीने भक्तिहीने नित्यं दास्यमतिं प्रभो ! ॥४१॥

नामान्यष्टोत्तरशतं पठतां प्रीतिपूर्वकम् ।
भवचिन्ताविपन्नानां शान्तिः शाश्वतिकी भवेत् ॥४२॥

इति त्र्यम्बकशर्मणा विरचितं श्रीरामकृणाष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रं समाप्तम् ।

हे रामकृष्ण ! हे कृपासिन्धो ! इत्यादि ॥४१॥

श्रीभगवान् रामकृष्णदेवजी का ये १०८ नाम श्रद्धा के साथ पाठ करने पर संसार की चिन्ता से विपन्न लोगों को चिरकाल के लिये शान्ति लाभ होगी ॥४२॥

श्रीत्र्यम्बक शर्मा के द्वारा विरचित
श्रीरामकृष्णदेवजी का अष्टोत्तर
शतनाम स्तोत्र समाप्त हुआ ।

———

प्रार्थना

केदारा—झाँपताल

II	+	२	०	३	
	सा रसा	मा । म ।	मा ।	मा । ।	I
	वि ०	श्व ० स्य	धा ०	ता ० ०	
I	+	२	०	३	
	पा पा	पा । ह्मधा	धा पा	पा । ।	I
	पु रु	ष ० स्त्व	मा ०	द्यो ० ०	
I	+	२	०	३	
	पर्सा र्सं	सा । ।	धा पा	पा । पा	I
	अव्य क्त	० ० ०	रू ०	पे ० ण	
I	+	२	०	३	
	मा मा	मा । मा	गरा ।	सा । सा	II
	त त	म् ० त्व	थे ०	द ० म्	
II	+	२	०	३	
	पर्सा ।	र्सा । र्सां	र्रंसां र्सं	र्सं । ।	I
	हे ०	रा ० म	कृ ष्	ण ० ०	
I	+	२	०	३	
	र्रां र्रां	र्रां । र्रां	र्सां र्सां	धा । ।	I
	त्व यि	म ० क्ति	ही ०	ने ० ०	

I	+	२	०	३		
	पह्मा धा	पा । धा पा ।		मा । मा	I	
	कृ ०	पा ० क टा		क्ष ० म		
I	+	२	०	३		
	रा मा	रा मा रा	मा ।	रा । सा	II	
	कु रु	दे ० व	नि ०	त्य ० म्		

'हे रामकृष्ण' से 'देव नित्यम्' तक २ बार गाकर बाद में इस स्वरलिपि और क्रम के अनुसार 'त्वं पासि' इत्यादि समस्त प्रार्थना स्तोत्र ही गाना होगा।

प्रणाम

मालकौश–तेवरा (रा पा वर्जित, कोमल ज्ञा, दा, णा)

	+		२	३	+		२	३				
स्थायी	II	सा ज्ञा सा ण् ा द् ा ण् ा सा	I	समा मा मा मा । मा मा	I							
		प र म ई ० श्व र		यु ० ग ई ० श्व र								
	+		२	३	+		२	३				
I	ज्ञा । मा दा । मा ।	I	ज्ञा मा । ज्ञा । सा ।	II								
	ज ० य रा ० म ०		कृ ० ० ष् ० ण ०									

	+	२	३	+	२	३	
II	ज्ञमा	मा ा ज्ञा ा	ज्ञा ज्ञा	I मा	दा दा	णा ण	णा ण I
	क	रु ० णा ०	म य	व	० र नि	र् म	य

	+	२	३	+	२	३	
I	मा ा	णा दा ा	मा ा I	I ज्ञा	मा ज्ञा	मा ज्ञा	सा ा II
	दे	० हि र ा ०	म ०	क्र	० ० ष्	० ण	०

इस अंश को दो बार गाना होगा।

	+	२	३	+	२	३	
अन्तरा II	मा ज्ञा ा	मा ा दा	दा I	I पा ा	णा र्सा ा	र्सा ा I	
	पु	रु ० षो ०	त्त म	जि	० त का	० म	०

	+	२	३	+	२	३	
I	ज्ञा ा र्सा	र्सा ा णा	दा I	I णा ा	णा णा	ा ा ा	I
	कां	० नच न	० रा म	कृ	० ष् ण	० ० ०	ा

	+	२	३	+	२	३	
I	र्सा र्मा ा	ज्ञा ा ज्ञा	ज्ञा ज्ञा I	I र्मा	र्मा र्मा	ज्ञा ा	र्सा र्सा I
	क	म ० ला ०	न न	प	ति त पा	० व	न

	+	३	३	+	३	३	
I	र्म र्सा	र्सा णा ा	दा ा I	I मा	दमा मा	ज्ञा ा	सा ा II
	हे	० ० रा	० म ०	कृ	०	० ष्	० ण ०

इसके बाद "परम ईश्वर" इत्यादि अंश गाना पड़ेगा।

\+ २ ३ + २ ३
संचारी I सा सा ा ण् ा द् ा द् ण् ा ण् I I सा ा सा ज्ञा ज्ञा सा सा I
त नु ० मु न् द र ह् ० दि क न् द र

\+ २ ३ + २ ३
I ज्ञा ज्ञा ा मा ा मा ा I I दा ा मा मा ज्ञा ज्ञा सा I
भा ति ० रा ० म ० कृ ० ० ष् ० ण ०

\+ २ ३ + २ ३
I मा ज्ञा मा मा मा मा मा I I दा ा दा णा णा णा I
म द ० म र् द न म ति व र् ध न

\+ २ ३ + २ ३
मर्सा ा णा णा ा दा दा I I मा दा ा मा ा ज्ञा सा]
त्रा ० हि रा ० म ० कृ ० ० ष् ० ण ०

इसके बाद "शिवशङ्कर" इत्यादि गाना होगा।

\+ २ ३ + २ ३
आभोग II माज्ञामा णा दा णा णा I I णा णा ा र्सा र्सा र्सा र्सा]
शि ० व शं क र अ भ ० य म् क र

\+ ३ ३ + ३ ३
I ज्ञ्ञा ा र्सा र्सा णा दा ा I I णा ा ा णा ा णा ा II
पा ० हि रा ० म ० कृ ० ० ष् ० ण ०

\+ २ ३ + ३ ३
I र्सा र्सा ा ज्ञ्ञा ज्ञ्ञा ज्ञ्ञा ज्ञ्ञा ा I I र्मा ा ज्ञ्ञा ज्ञ्ञा ा र्सा र्सा I
श र ० ण म् म म हे ० प्रि य ० त म

\+ २ ३ + २ ३
I र्मं र्सं र्सं सा णा ा दा ा I I मा दा ा मा ा ज्ञा सा
प्र ० ० भु रा ० म ० कृ ० ० ष् ० ण ० II

सपार्षद श्रीरामकृष्ण-वन्दना

प्रभाती-त्रिताल (भुवनमंगल का सुर)

० १ + ३
I गा गा रा सा ना सा धा नूसा मा मा मा मा गा रसा मा ा I
ज य ज य रा म कृ ष्ण वां छा क ल्प त ० रु ०

० १ + ३
I मा मा मा मा धपा पा मा गा गधा धा पा मा गा ा रग मा I
ज य ज य म ग वा नू ज ग ते र गु ० रु ०

० १ + ३
II गमा मा धा धा मधा धा ना सां रां रं रंसां धा मा ना सां I
ज य ज य ज ग दी श मं ग लनि दा ० न ०

० १ + ३
I मा मा मा मा पा पा मा गा मा धा पा मा गरा गा मा ा ा I
रा म कृ ष्ण रू पे तु मि ए ले म ग वा ० नू ०

इसके बाद 'जय जय रामकृष्ण' इत्यादि जगतेर गुरु तक गाकर, फिरसे "जय जय रामकृष्ण वांछा-कल्पतरु" तक गाना पड़ेगा और बाद में "जय जय नररूप" इत्यादि तीसरी कलि प्रथम कलि के स्वर से गाना पड़ेगा। और इसी क्रम से चौवीस कलि तक गाकर आखिरी कलि अर्थात् पच्चीस कलि, नवी कलि 'जय जय रामकृष्ण' इत्यादि पहली कलिके सुर से दो बार गाकर 'सपार्षदादि श्रीरामकृष्ण वन्दना गान समाप्त करना होगा।

श्रीरामकृष्णनामामृत-संकीर्तन

कीर्तन मिश्र—त्रिताल

० १ + ३
II मर्सां सां सां सां सं सां सां सां सांसां संरं रां सां ना । । I
१। ग या धा मे क्षु दि रा म स्वप्न यो गे जा नि ० ०

० १ + ३
सां सां सां सां ना ना धा ना पा धा ना ना सांना ना । । II
ग दा ध र ना म पु त्रे दि ले न आ प नि ० ०

० १ + ३
II गमा मा मा मा पा पा पा पा ना ना धा धा पा पा । । I
२। हे ग दा ई ब ले डा के मा ता च न्द्र म णि ० ०

० १ + ३
ना ना ना ना धा धा पा पा मा पा पा पा पा पा । । II
आ दु रे दु ला ल डा के ध नी का मा र नी ० ०

० १ + ३
मा मा मा मा गमा मा मा मा मा घा पा मा गा गा । । I
३। स्वा मी दे वे ब ले दे वी सा र दा ज न नी ० ०

० १ + ३
मा मा मा मा गा गा रा गा सा सा रा रा गा गा । । II
मा ता पि ता मा ई ब न्धु स ब मो र ति नि ० ०

० १ + ३
४। मा मा मा मा पा पा पा पा ना ना धा धा पा पा । । I
ओ हे रा म कृ ष्ण तु मि भ क्ति ही न ज ने ० ०

० १ + ३
ना ना ना ना धा धा पा धा मा मा पा पा पा पा ा ा II
कृ पा दृ ष्टि क र दे व स दा नि ज गु णे ० ०

इसके वाद ५, ६, ७, ८ कलि इसी सुर से अर्थात् ५वीं कलि १ली कलि की तरह, ६ठी कलि दूसरी कलि की तरह, ७वीं कलि तीसरी कलि की तरह, ८वीं कलि चौथी कलि की तरह और इसी क्रम से ३६ कलि तक गाना पड़ेगा। कभी-कभी ४थी कलि को दो तीन बार द्रुत लय से गाना पड़ता है। "श्रीरामकृष्ण नामामृत" ३६ कलि तक गाकर "धर्मेर स्थापक यिनि" इत्यादि अंश को गाना पड़ेगा।

केदारा—कबाली (द्रुत)

० १ + ३
II सा सा रमा मा मा मा मा मा पा पा ह्मपा धा पा पा मा मा I
(दोबार) ध र्मे र स्था प क यि नि अ व ता र शि रो म णि

१ + ३
सी सी धा सी दी धा पा ह्मा पा ा पा ा मा रा ा गा I
से इ रा म कृ ष्ण भ ग वा ० द् ० आ ० हा ०

० १ + ३
सेरा मा रा मा पा पा ह्मा ह्मा पा ा पा ा मा ा रा गा II
से इ रा म कृ ष्ण भ ग वा ० द् ० (ओ० गो०)

० १ + ३
मैंसी सी सी सी सी सी सी सी सीरी री री री सीसी धा I
मूर्ति मा व से र्व धर्म के उ ल्कि वे तव म र्म

० १ + ३
मरा मा पा पा ह्मा ह्मा पापा धा । धा । पा मा सरा रा I
दी ने क र कृ पा कण दा ० न ० ओ ० गो ०
० १ + ३
रा धा धा धा पा पा मा मा रा । रा । सा । । । II
दी ने क र कृ पा क णा दा ० न ० ० ० ० ०

इसी क्रम से आखिरी कलि—'आमि जानि तुमि मोर' यहाँ तक गाना पढ़ेगा।

श्रीरामकृष्णनामामृत-माहात्म्य

गौड़सारंग-मिश्र—त्रिताली (भवभय-भंजन का सुर)

० १ + ३
II मा मा धा पा धा धा धा धा पा धा ना सां सां सां नाधपा I
अ ष्टो त्त र श त ना म क रि ले ० की र्त ० न
० १ + ३
II पा सां णा णा धा पा मा गा रा गा मा पा मा । मां । II
रा म कृ ष्ण कृ पा भा गी ह वे से इ ज़ ० न ०
० १ + ३
पसां सां सां सं सां सां सां सां पासां सां सां रां । रां । I
शो न रे अ बो ध म न ठा कु रे र क ० था ०

० १ + ३
ना ना ना ना धा धा पा धा मा मा पा पा पा पा ा ा II
कृ पा दृ ष्टि क र दे व स दा नि ज गु णे ० ०

इसके बाद ५, ६, ७, ८ कलि इसी सुर से अर्थात् ५वीं कलि १ली कलि की तरह, ६ठी कलि दूसरी कलि की तरह, ७वीं कलि तीसरी कलि की तरह, ८वीं कलि चौथी कलि की तरह और इसी क्रम से ३६ कलि तक गाना पड़ेगा। कभी-कभी ४थी कलि को दो तीन बार द्रुत लय से गाना पड़ता है। "श्रीरामकृष्ण नामामृत" ३६ कलि तक गाकर "धर्मैर स्थापक यिनि" इत्यादि अंश को गाना पड़ेगा।

केदारा—कबाली (द्रुत)

० १ + ३
II सा सा रमा मा मा मा मा मा पा पा ह्मपा धा पा पा मा मा I
(दोबार) ध र्मे र स्था प क यि नि अ व ता र शि रो म णि

० १ + ३
सां सां धा सां धा धा पा ह्मा पा ा पा ा मा रा ा गा I
से इ रा म कृ ष्ण भ ग वा ० न् ० आ ० हा ०

० १ + ३
सरा मा रा मा पा पा ह्मा ह्मा पा ा पा ा मा ा रा गा II
से इ रा म कृ ष्ण भ ग वा ० न् ० (ओ० गो ०)

० १ + ३
मर्सा र्सा र्सा र्सा र्सां र्सा र्सा र्सं र्रं र्रा र्रा र्रा र्सां र्सा धा I
मूर्ति मा न् स र्व धर्म के बु झि वे तव म र्म

० १ + ३
मरा मा पा पा ह्मा ह्मा पापा धा ा धा ा पा मा सरा रा I
दी ने क र कृ पा कण दा ० न ० ओ ० गो ०
० १ + ३
रा धा धा धा पा पा मा मा रा ा रा ा सा ा ा ा II
दी ने क र कृ पा कणा दा ० न ० ० ० ० ०

इसी क्रम से आखिरी कलि—'आमि जानि तुमि मोर' यहाँ तक गाना पड़ेगा।

श्रीरामकृष्णनामामृत-माहात्म्य

गौड़सारंग-मिश्र—त्रिताली (भवभय-भंजन का सुर)

० १ + ३
II मा मा धा पा धा धा धा पा धा ना सां सां सां नाधपा I
अ ष्टो त्त र श त ना म क रि ले ० की र्त ० न
० १ + ३
II पा सां णा णा धा पा मा गा रा गा मा पा मा ा मां ा II
रा म कृ ष्ण कृ पा मा गी ह वे से इ ज ० न ०
० १ + ३
पसां सां सां सं सां सां सां सां पासां सां सां रां ा रां ा I
शो न रे अ बो ध म न ठा कु रे र क ० था ०

० १ + ३
धा सां धा सं धा पा पा मा पा पा पा धा धा । धा । I
नि ज मु खे ब ले छे न ना ह य अ न्य ० था ०

० १ + ३
पर्सा सां सां सां सां सां सां सां पा सां सां सां रां । रां । II
नि ज मु खे ब ले छे न ना ह य अ न्य ० था ०

० १ + ३
धर्सा सां धा सां धा धा पा पा मा पा पा पा धा । धा । । I I
नि ज मु खे ब ले छे न ना ह य अ न्य ० था ०

इसके बाद "ये करे आमार नाम" और "पितार ऐश्वर्य लाभं" इत्यादि दो कलि पहलीं दो कलि के सुर से गाकर उसी क्रमसे दो-दो कलि के क्रम से आखीर तक गाना पड़ेगा, बाद में "अष्टोत्तर शतनाम" इत्यादि पहली कलि गाकर "नामामृतमाहात्म्य समाप्त करना होगा।

"स्थापकाय च" इत्यादि प्रणाम

II धा धा धा धा धा धा धा धा णा णा णा णा धा धा धा पा I
स्था प का य च ध र्म स्य स र्व ध र्म स्व रू पि णे
मा मा पा धा गा मा गा रा रा गा मा पा मा मा मा मा मा I
अ व ता र व रि ष्ठा य रा म कृ ष्णा । य ते न मः

श्रीश्रीसारदानामामृतम्

श्रीसारदा-देवीजी का ध्यान: *

ध्यायेत्हृत्कमलासने सुखासीनां कृपामयीम् ।
प्रसन्नवदनां देवीं द्विभुजां स्थिरलोचनाम् ॥१॥
आलुलायित केशार्ध-वक्षःस्थलाभिमण्डिताम् ।
श्वेतवस्त्रावृतार्धांगां हेमालंकारभूषिताम् ॥२॥
स्वक्रोढ़न्यस्तहस्तां च ज्ञानभक्तिप्रदायिनीम् ।
शुभ्रज्योतिर्मयीं जीवपापसन्तापहारिणीम् ॥३॥

हृदयरूप कमलासन में सुखासीना करुणामयी प्रफुल्लवदना द्विभुजा स्थिरलोचनवाली देवी का ध्यान करें ॥१॥

खुले केश के अर्धांश द्वारा जिनका अर्धवक्षःस्थल अलंकृत, शुक्लवस्त्रों से जिनका अर्धांग आवृत तथा स्वर्णालङ्कारों से विभूषित, ऐसी देवी का ध्यान करें ॥२॥

अपनी गोद में दोनों हाथों को रखनेवाली, लोगों को ज्ञान तथा भक्ति देनेवाली, शुभ्रज्योतिर्मयी, जीवों के पाप ताप दूर करनेवाली देवी का ध्यान करें ॥३॥

---

* श्रीमत्स्वामी अभेदानन्द-विरचित ये ध्यानमन्त्र श्रीरामकृष्ण वेदान्तयठ-प्रकाशित 'नित्यपूजाविधि ग्रन्थ से उद्धृत हुये हैं ।

रामकृष्णगतप्राणां तन्नामश्रवणप्रियाम् ।
तद्भावरंजिताकारां जगन्मातृस्वरूपिणीम् ॥४॥
जानकी-राधिकारूपधारिणीं सर्वमंगलाम् ।
चिन्मयीं वरदां नित्यां सारदां मोक्षदायिनीम् ॥५॥

पति श्रीरामकृष्ण में प्राण अर्पण करनेवाली, उनका नाम जिनका अति प्रिय है, उनके भाव में अपने हृदय को रंजित करनेवाली तथा जगत के समस्त प्राणियों का स्वरूप धारण करनेवाली देवी का सदा ध्यान करें ॥४॥

जानकी और राधिका का रूप धारण करने वाली, समस्त जीवों की मंगलदायिनी, चिन्मयी, वर देनेवाली, नित्य, मोक्षदायिनी, सारदा देवी का सदा ध्यान करें ॥५॥

श्रीसारदानवकम्

(रामनाम संकीर्तन के 'वर्णानाम' इत्यादि की तरह गान करना होगा।)

सर्व सौभाग्य-सन्दोहे ब्रह्मानन्द-पयस्विनि।
रामकृष्णार्चिते शुद्धे सारदे त्वां नमाम्यहम् ॥१॥
विवेकानन्दसंध्येयां क्षमारूपां तपस्विनीम्
सारदां दिव्यभूषां त्वां नारायणि स्मराम्यहम् ॥२॥
माहेशि महदाराध्ये चित्प्रेमानन्दसंप्रदे।
सारदे जगतामाद्ये नारायणि नमोऽस्तुते ॥३॥

समस्त सौभाग्य दात्री ब्रह्मानन्दरूप दुग्ध प्रदायिनी, रामकृष्ण के द्वारा पूजाप्राप्त, विशुद्धचित्तवाली हे सारदा देवी! आपको मैं प्रणाम करता हूँ ॥१॥

स्वामी विवेकानन्द के द्वारा जिनका ध्यान किया गया है, क्षमास्वरूपिणी कठोर तपस्या करनेवाली, दिव्य वस्त्रालंकार धारण करनेवाली हे नारायणी सारदा देवी! आपका मैं सदा स्मरण करता हूँ ॥२॥

हे महेश्वरी! आप महान व्यक्तियों की आराध्या हैं तथा ज्ञान और प्रेमानन्ददायिनी हैं, और आप संसार की आदि जननी हैं। हे नारायणी! आपको मैं प्रणाम करता हूँ ॥३॥

महापुरुषसंसेव्ये हंसेश्वरि सुमंगले ।
शिवानन्दप्रदे मातः सारदे त्वामहं भजे ॥४॥
सारदानन्दसंपूज्ये वरेण्ये सारदायिके ।
प्रसन्नवदनाम्भोजे सारदे त्वां नतोऽस्म्यहम् ॥५॥
विमले कमले सीते शारदे सारदे शिवे ।
कलिकलुषपापघ्ने कात्यायनि नमोऽस्तुते ॥६॥
यतिसंघसमाराध्ये यतिसंघ-सुहासिनि ।
तत्संघत्राणदात्री त्वं सारदे त्वां नता वयम् ॥७॥

महापुरुषों के द्वारा सेवित हंसेश्वरी सुमंगलदायिनी, मंगल और आनन्दप्रदायिनी मां सारदे ! मैं तुम्हारा भजन करता हूँ ॥४॥

सारदानन्द के द्वारा सम्यक्‌रूप से पूजित वरणीय, ज्ञानभक्ति-दात्री तथा प्रसन्नवदनकमलयुक्त हे सारदे ! आपको में प्रणाम करता हूँ ॥५॥

विमलकमलतुल्य, सतीस्वरूपिणी सीता, सरस्वती शिवानी कलिकलुषपापनाशिनी कात्यायनी मैं आपको प्रणाम करता हूँ ॥६॥

यतिसंघ के द्वारा सम्यक् रूप से आराधिता यतिसंघ को प्रसन्न करने वाली, यतिसंघ को पापताप से मुक्त करनेवाली, हे सारदे ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ ॥७॥

सारदे ! वरदे मातर्ब्रह्मशक्ति सनातनि ।
निष्कलंक-सुचरित्रं भक्तिमन्तं कुरुष्व माम् ॥८॥
सर्वोत्कृष्ट-गुणाधारे गुणाढ्ये सर्वसाधिके ।
शरण्ये सारदे दुर्गे नारायणि नमोऽस्तुते ॥९॥
(जय) नारायणि नमोऽस्तु ते, नारायणि नमोऽस्तु ते ।
नारायणि नमोऽस्तु ते, नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

हे सारदे ! तुम वर देनेवाली माता, ब्रह्मशक्ति स्वरूपिणी और सनातनी हो । तुम मुझे निष्कलंक चरित्रवान् तथा भक्तिमान करो ॥८॥

तुम सर्वोत्कृष्ट गुणाधार बहुगुणयुक्त, सर्वसिद्धि देनेवाली हो, तुम शरणागतों का पालन करनेवाली हो । हे सारदे, हे दुर्गे, नारायणी तुम्हें मैं प्रणाम करता हूँ ॥९॥

(जय) हे नारायणी ! तुम्हें प्रणाम है, हे नारायणी ! तुम्हें प्रणाम है, हे नारायणी ! तुम्हें प्रणाम है, हे नारायणी ! तुम्हें प्रणाम है ।

———

देवी-ध्यानम्

(रामनाम संकीर्तन के 'नान्यास्पृहा' की तरह गान करना होगा ।)

ध्यायेद् हृदम्बुजे देवीं, तरुणारुणविग्रहाम् ।
वराभयकरां शान्तां, स्मितोत्फुल्लमुखाम्बुजाम् ॥१॥
स्थलपद्म-प्रतीकाश-पादाम्भोजसुशोभनाम् ।
शुक्लाम्बरधरां धीरां, लज्जापट-विभूषिताम् ॥२॥
प्रसन्नां धर्मकामार्थ-मोक्षदां विश्वमंगलाम् ।
स्वनाथवामभागस्थां भक्तानुग्रहकारिणीम् ॥३॥
श्वेतपद्मासनां देवीं सारदां शारदोपमाम् ।
अभयां वरदां नित्यां मातृ-विग्रहधारिणीम् ॥४॥

हृदयकमल में तरुण तपनमूर्ति, वर तथा अभय देनेवाली, शान्त, ईषत् हास्योत्फुल्ल मुखकमलयुक्त देवी का ध्यान करें ॥१॥

स्थलकमल के समान चरणकमलशोभित, श्वेतवस्त्र पहनी हुई, धीर तथा लज्जारूप वस्त्रों से विभूषित देवी का ध्यान करें ॥२॥

प्रसन्नचित्त, धर्म अर्थ काम्य वस्तु तथा मोक्ष देनेवाली, संसार का मंगल करनेवाली, अपने पति के बायीं ओर बैठनेवाली तथा भक्तों के प्रति सदा अनुग्रह करनेवाली देवी का ध्यान करें ॥३॥

श्वेतकमल पर बैठी हुई सरस्वती के समान, अभय और वर देनेवाली, सदा विराजमान, माता के समान शरीर धारण करनेवाली सारदा देवी का ध्यान करें ॥३॥

श्रीमतयाः सारदादेव्याः स्तोत्रम्

('भीमपलश्री' स्वर से गाना होगा ।)

प्रकृतिं परमामभयां वरदां,
नररूपधरां जनतापहराम् ।
शरणागत सेवकतोषकरीं,
प्रणमामि परां जननीं जगताम् ॥१॥

गुणाहीनसुतानपराधयुतान्,
कृपयाद्य समुद्धर मोहगतान् ।
तरणीं भवसागर पारकरीं,
प्रणमामि परां जननीं जगताम् ॥२॥

हे देवी सारदे ! तुम परमा प्रकृति हो, तथा अभय वर देनेवाली, मनुष्य का रूप धारणकर इस संसार में आयी हो और मनुष्यों की त्रिताप-ज्वाला बुझा देती हो, शरणागत सेवकों को आनन्द दान करती हो, हे जगज्जननी परा प्रकृति, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ ॥१॥

गुणहीन, अपराधी, संसार माया में मोहप्राप्त पुत्रों का कृपा करके उद्धार करो हे माता, तुम भवसागर से पार करनेवाली नौका हो, हे जगज्जननी ! तुम परा प्रकृति हो, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ ॥२॥

विषयं कुसुमं परिहृत्य सदा,
चरणाम्बुरुहामृत-शातिसुधाम् ।
पिब भृंगमनोभवरोगहरां,
प्रणमामि परां जननीं जगताम् ॥३॥

कृपां कुरु महादेवि सुतेषु प्रणतेषु च,
चरणाश्रयदानेन कृपामयि नमोऽस्तु ते ॥४॥

लज्जापटावृते नित्यं सारदे ज्ञानदायिके ।
पापेभ्यो नः सदा रक्ष कृपामयि नमोऽस्तु ते ॥५॥

रामकृष्णगतप्राणां तन्नामश्रवणप्रियाम् ।
तद्भाव रंजिताकारां प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥६॥

विषय रूप फूलों को छोड़कर हे जीव ! तुम इनका चरणामृत रूप शान्ति सुधा का पान करो, जो संसार-रोग का हरण करनेवाला है, हे परमप्रकृतिरूप जगज्जननी ! तुम्हें मैं प्रणाम करता हूँ ॥३॥

हे महादेवी ! प्रणाम करनेवाले पुत्रों को चरणाश्रय देकर हे करुणामयी कृपा करो । मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ ॥४॥

लज्जारूप वस्त्र से आवृत, हे सारदा माता ! तुम सदा जीवों को ज्ञान दान करती हो, हे कृपामयी ! तुम हमें पापों से सर्वदा बचाती रहो, हे कृपामयी ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ ॥५॥

जिनका हृदय पति श्रीरामकृष्ण में तन्मय है, उनका नाम सुनने में जो प्रसन्न होती हैं तथा जिनका मन उन्हीं के भाव में रंजित है, उन सारदा माता को मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ ॥६॥

पवित्रं चरितं यस्याः पवित्रं जीवनं तथा ।
पवित्रतास्वरूपिण्यै तस्यै कुर्मो नमोनमः ॥७॥

देवीं प्रसन्नां प्रणतार्तिहन्त्रीं,
योगीन्द्र पूज्यां युगधर्मपात्रीम् ।
तां शारदां भक्तिविज्ञानदात्रीं,
दयास्वरूपां प्रणमामि नित्यम् ॥८॥

स्नेहेषु बध्नासि मनोऽस्मदीयं,
दोषानशेषान् सगुणीकरोषि ।
अहेतुना नो दयसे सदोषान्,
स्वांके गृहीत्वा यदिदं विचित्रम् ॥९॥

जिनका चरित्र पवित्र है, और जिनका जीवन पवित्र है तथा जो पवित्रता का स्वरूप हैं हमलोग उन्हें बार-बार प्रणाम करते हैं ॥७॥

जो देवी सदा प्रसन्न, प्रणत जनों का दुःख दूर करनेवाली हैं, जो श्रेष्ठ योगियों द्वारा पूजित हैं, युग के धर्मों की रक्षा करनेवाली हैं, जो भक्ति और विज्ञान देनेवाली हैं उन दयास्वरूपा सारदा माता को बार-बार प्रणाम करता हूँ ॥८॥

हे माँ सारदे ! आपने हमारे मनों को स्नेह के द्वारा बाँध लिया है, हमारे अशेष दोषों को गुण बनाया है, बिना कारण कृपा करके आपने दोषयुक्त शिष्यों को अपने गोदी में ग्रहण करके दोष-मुक्त कर दिया है—यह विचित्र बात है ॥९॥

प्रसीद मातर्विनयेन याचे,
नित्यं भव स्नेहवती सुतेषु ।
प्रेमैकबिन्दुं चिरदग्धचित्ते,
विषिंच चित्तं कुरु नः सुशान्तम् ॥१०॥
जननीं सारदां देवीं रामकृष्णं जगद्गुरुम् ।
पादपद्मे तयोः श्रित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥११॥
इति श्रीअभेदानन्द स्वामिना विरचितं
श्रीमत्याः सारदादेव्याः स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

हम विनय के साथ आप से प्रार्थना करते हैं आप प्रसन्न रहें और सदा पुत्रों के प्रति स्नेहवती रहे। हमारे दग्धचित्त में भगवत् प्रेम का एक विन्दु सिंचन कर हमें शान्त करें ॥१०॥

जननी सारदादेवी तथा जगद्गुरु रामकृष्ण के चरण-कमलों का आश्रय लेकर मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ ॥११॥

श्रीअभेदानन्द विरचित श्रीमती सारदादेवीजी का स्तोत्र समाप्त ॥

ॐ सर्वदेवदेवीस्वरूपिण्यै श्रीशारदादेव्यै नमः ।

(श्रीरामनामसंकीर्तन के 'शुद्धब्रह्मपरात्पर राम' इस स्वर से गान करना होगा) ।

आदि-लीला

१। त्वं मे ब्रह्मसनातनि माँ
२। ब्रह्मशक्तिमय-रूपिणि माँ
३। सच्चित्सुखयुत-रूपिणि माँ
४। सहस्रार-शिवसंगिनि माँ
५। अगाधलीला-रूपिणि माँ

ॐ सर्वदेव-देवीस्वरूप श्रीशारदादेवी को प्रणाम करता हूँ ॥

श्रीरामनाम संकीर्तन के "शुद्धब्रह्मपरात्पर राम" इस स्वर से गाना होगा ।

आदि-लीला

१। माँ ! तुम मेरी ब्रह्मशक्ति स्वरूपिणी और सनातनी माँ हो ।
२। माँ ! तुम ब्रह्मशक्ति-स्वरूपा हो ।
३। माँ ! तुम सच्चिदानन्द-स्वरूपिणी हो ।
४। माँ ! तुम सहस्रार में, परम शिव के साथ विराजमान हो ।
५। माँ ! तुम अथाहलीला स्वरूपिणी हो ।

६। चिन्मयरूप-विलासिनि माँ
७। आद्याशक्ति-लीलामयि माँ
८। चितिसुखदायिनितारिणि माँ
९। दुर्गति-दुर्मति-नाशिनि माँ
१०। महाकालहृदि-नर्तिनि माँ

बाल-लीला

११। जयरामवाटी-धृतजनि माँ
१२। धर्मग्लानि विनाशिनि माँ
१३। आश्रित श्यामासुन्दरि माँ

६। माँ ! तुम चिन्मयरूप से विविध विलास करती हो।
७। माँ ! तुम आद्याशक्ति रूप से लीला करती हो।
८। माँ ! आश्रितों को तुम ज्ञानानन्द देनेवाली और उनका परित्राण करनेवाली हो।
९। माँ ! तुम शरणागत की दुर्गति से रोकनेवाली तथा शरणागत दुर्मति का नाश करनेवाली हो।
१०। माँ ! तुम महाँकाल के हृदय में नाचनेवाली हो।

बाल–लीला

११। माँ ! तुम जयरामबाटी ग्राममें आविर्भूत हुई थी।
१२। माँ ! तुम धर्मग्लानि विनाशिनी हो।
१३। माँ ! तुमने श्यामा सुन्दरी के गर्भ में जन्म लिया था।

१४।	रामचन्द्र-द्विज-दुहिता	माँ
१५।	मार्गशीर्षतिथि-पावनि	माँ
१६।	असित-सप्तमी-जननि	माँ
१७।	क्षेमंकरि-पदभूषिता	माँ
१८।	विश्वमंगलागमना	माँ
१९।	रामकृष्णसहधर्मिणि	माँ
२०।	पञ्चवर्ष-परिणीता	माँ

१४। माँ ! तुमने ब्राह्मणश्रेष्ठ पिता रामचन्द्र की कन्यारूप में लीला-विग्रहरूप से शरीर धारण किया था।

१५। माँ ! तुमने अपने आविर्भाव के द्वारा शुभ मार्गशीर्ष महीने को पवित्र किया।

१६। माँ ! तुम कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि में प्रकट हुई थीं।

१७। माँ ! तुम 'क्षेमंकरी' (सर्वशुभदायिनी) इस नाम से अलंकृत हुई थीं।

१८। माँ ! सारे संसार के कल्याण के लिये तुम्हारा आगमन हुआ था।

१९। माँ ! तुम श्रीराकृष्ण की सहधर्मिणी के रूप में परिचिता हो।

२०। माँ ! पाँचवर्ष की आयु में पति के साथ तुम्हारा विवाह हुआ था।

२१। धर्मस्थापनकारिणि माँ
२२। रम्यसरल-पथदर्शिनि माँ
त्वं मे ब्रह्मसनातनि माँ, ब्रह्मशक्तिमयरूपिणि मां
२३। मातृभावपरिशोधिनि माँ
२४। भक्तहृदयअधिवासिनि माँ
२५। जनक-जननि-सुखवर्धिनि माँ
२६। दुःख-दलित-जननन्दिनि माँ
२७। जगद्धात्री-निजरूपिणि माँ
२८। सिंहवाहिनी-पूजनि माँ

२१। माँ ! तुम धर्म की स्थापनकारिणी हो।
२२। माँ ! तुमने सबको सुन्दर और सरल साधन मार्ग दिखलाया।
टेक—माँ ! तुम मेरीब्रह्मशक्तिस्वरूपिणी और सनातनी माँ हो।
२३। माँ ! तुमने इस संसार में शुद्ध मातृभाव को प्रकट किया।
२४। माँ ! तुम (सदा शुद्ध) भक्तहृदय में वास करती हो।
२५। माँ ! तुमने अपने जनक-जननी का सुखवर्धन किया।
२६। माँ ! तुम दुःख-निपोड़ित लोगों को आनन्द देती हो।
२७। माँ ! तुम अपने 'जगद्धात्री' इस रूप से जगत् का कल्याण करती हो।
२८। माँ ! तुमने जयरामबाटी में सिंहवाहिनी का पूजन किया।

साधन-लीला

२९। श्रुतपति-साधन-निरता माँ
३०। तत्सन्दर्शन-कृत-मति माँ
३१। रामकृष्णकृत स्वागति माँ
३२। पति-अवलोकन-पुलकिनि माँ
३३। रामकृष्णशरणागति माँ
३४। साधक-पति-सेवारति माँ
३५। 'सरस्वती' इति-लक्षिणि माँ

साधन–लीला

२९। माँ ! पति के (अलौकिक दिव्य) साधनों की बात (लोगों से) सुनकर तुम उनकी चिन्ता में मग्न हुई थीं।

३०। माँ ! पति को देखने के लिये तुमने दृढ़ निश्चय किया था।

३१। माँ ! (पिता के घर से दक्षिणेश्वर में आने पर) श्रीरामकृष्ण देव के द्वारा आदरपूर्वक तुम्हारा स्वागत हुआ था।

३२। माँ ! पति के दर्शन से तुम आनन्दित हुई थीं।

३३। माँ ! तुम श्रीरामकृष्णदेव की शरण में आई थीं :

३४। माँ ! साधन निरत पति की सेवा में तुमने चित्त लगाया था।

३५। माँ ! (श्रीरामकृष्णदेव ने कहा था) ज्ञान देनेवाली सरस्वती के रूप में तुम अवतीर्ण हुईं।

३६। ज्ञान-दान-शुभ-आगति माँ
३७। नारायणलक्ष्मी-जनि माँ
३८। शिवपार्वतीसम-उपमित माँ
३९। रामचन्द्र-प्रिय-जानकि माँ
४०। कृष्णचन्द्र-राधा-सम माँ
४१। निशीथ-समय-ध्यायिनि माँ
४२। लक्षजपाज्जलसेविनि माँ
४३। पति-सेवोत्तम-व्रतिनि माँ

३६। माँ ! (सबको) ज्ञान देने के लिये ही तुम्हारा शुभ आगमन हुआ ।

३७। माँ ! तुम नारायण की सहचरी लक्ष्मी के समान हो ।

३८। माँ ! तुम शिवसंगिनी पार्वती के समान हो ।

३९। माँ ! तुम श्रीरामचन्द्र की प्रिया जानकी के समान हो ।

४०। माँ ! तुम श्रीकृष्ण-प्रिया राधा की स्वरूपिणी हो ।

४१। माँ ! तुम गम्भीर रात्रि में ध्यानमग्न रहती थीं ।

४२। माँ ! तुम हर रोज एक लाख (संख्या का) जप करने के पश्चात् जल-ग्रहण करती थीं ।

४३। माँ ! तुमने पति-सेवारूप उत्तम व्रतग्रहण किया था तथा उसका पालन भी किया था ।

४४। पतिभोजनमनुभोजिनि माँ
४५। कठिनतपोरतमानस माँ
४६। पूजित-षोड़श-रूपिणि माँ

त्वं मे ब्रह्मसनातनि माँ, ब्रह्मशक्तिमयरूपिणि माँ

४७। चरणार्पित-पति-जपतप माँ
४८। दिव्यभावभृत-तन्मय माँ
४९। त्यागे गौरववर्धिनि माँ

४४। माँ ! तुम पति को भोजन कराने के पश्चात् स्वयं अन्नग्रहण किया करती थीं।

४५। माँ ! तुमने दुश्चर तपस्या में मनोनिवेश किया था।

४६। माँ ! श्रीरामकृष्णदेव के द्वारा षोड़शी के रूप में तुम्हारी पूजा हुई थी।

टेक—मां तुम मेरी ब्रह्मशक्तिस्वरूपिणी और सनातनी मां हो।

४७। मां ! पति श्रीरामकृष्णदेव ने सारे जप-तप का फल तुम्हारे चरणों में अर्पण किया था।

४८। मां ! उस समय (अर्थात् षोड़शी पूजा के अपसर पर) तुम दिव्य भावावेश में तन्मय हो गई थीं।

४९। मां ! तुमने सर्वदा त्याग के गौरव को बढ़ाया।

वात्सल्य-लीला

५०।	लज्जापटावृतसारद	माँ
५१।	रामकृष्णजन-सेविनि	मां
५२।	नरेन्द्र-दर्शन-हर्षिणि	मां
५३।	आश्रितसन्तति-तोषिणि	मां
५४।	सेवातप-सम्मेलनि	मां
५५।	आचण्डाल-सकरुणा	मां

वात्सल्य—लीला

५०। मां ! शारदा देवि ! तुम सर्वदा लज्जारूप वस्त्र से ढँकी रहती थीं।

५१। मां ! तुम श्रीरामकृष्णदेवजी के भक्तों की सेवा में सदा तत्पर रहती थीं।

५२। मां ! नरेन्द्र को देखकर तुमने आनन्द प्रकट किया था।

५३। मां ! तुम सदा शरण में आई हुई सन्तानों का सन्तोष विधान करती हो।

५४। मां ! तुम्हारे जीवन में सेवा और तपस्या का मधुर मिलन हुआ था।

५५। मां ! चण्डाल तक सबके ऊपर ही तुम्हारी कृपावृष्टि हुई।

५६ करामलक-मुक्तीकरि मां
५७ धृत-निज-कालीरूपिणि मां
५८। दस्यूपरि-अनुकम्पिनि मां

पतिवियोग-लीला

५९। पतिवियोग-सन्तप्ता मां
६०। तद्दर्शनकृत-सान्त्वनि मां
६१। वृन्दावन-तप-चरणा मां
६२। कृष्णभाव-परिमग्ना मां

५६। मां ! तुम हाथ में रखे हुये आंवले की तरह प्रत्यक्ष मुक्ति देनेवाली हो।

५७। मां ! तुमने स्वयं काली का रूप धारण किया था।

५८। मां ! दस्यु के ऊपर भी तुम्हारी कृपा वर्षित हुई थी।

पतिवियोग–लीला

५९। मां ! पति के वियोग से तुम बड़ी दुःखी हुई थीं।

६०। मां ! तुमने पति के अलौकिक दिव्य दर्शन से सान्त्वन प्राप्त की थी।

६१। मां ! तुमने वृन्दावन में कठोर तप का आचरण अर्थात् कठोर तप किया।

६२। मां ! तुम वृन्दावन में कृष्ण की चिन्ता में निमग्न हुई थीं।

तीर्थसेवन–लीला

६३। पञ्चतपः कृत-साधनि मां
६४। नीलाचल-तपवासिनि मां
६५। रामेश्वर-शिवपूजनि मां
६६। विश्वनाथभावस्थित मां.
६७। 'अविमुक्ता' काशी-मत मां
६८। 'कीटोह्यपि मुक्तो' मति मां

तीर्थसेवन-लीला

६३। मां ! तुमने कठोर 'पञ्चतपा' साधन का अनुष्ठान किया था ।

६४। मां ! तुमने नीलाचल में (पुरीधाम में भी) कितने ही तप किये ।

६५। मां ! तुमने सेतुबन्ध रामेश्वर में यत्नपूर्वक देवाधिदेव महादेवजी का पूजन किया ।

६६। मां ! तुम (काशी में) श्रीविश्वनाथजी की चिन्ता में तन्मय हुई थीं ।

६७। मां ! काशी 'अविमुक्त'–क्षेत्र (मोक्ष-क्षेत्र) है इस बात की तुमने घोषणा की थी ।

६८। मां ! (काशी में मरने के बाद मामूली) कीड़ा भी मुक्त हो जाता है—तुमने यह कहा था ।

६९। गंगाप्रीतिकारिणी मां
७०। तद्विलीन-पति-दर्शिनि मां
७१। सकलदेव-सम-दर्शिनि मां
७२। आश्रित-करुणा-कारिणि मां
७३। भक्तिज्ञानविधायिनि मां
७४। सर्वजनाश्रयदायिनि मां
७५। जनतापत्रयवारिणि मां
७६। रामकृष्ण-संघेश्वरि मां

त्वं मे ब्रह्मसनातनि मां। ब्रह्मशक्तिमयरूपिणि मां

६९। मां ! देवनदी गंगा के प्रति तुम्हारा बड़ा प्रेम था।
७०। मां ! पति श्रीरामकृष्णदेव गंगाजी में मिल गये—तुमने ऐसा दिव्यदर्शन किया।
७१। मां ! सारी देवताओं को तुम समानरूप से देखती थीं।
७२। मां ! शरण आई हुई जनता के प्रति सर्वदा तुम्हारी कृपा वर्षित होती थी।
७३। मां ! तुम ज्ञान और भक्ति की देनेवाली हो।
७४। मां ! तुमने सारे प्राणियों को आश्रय दिया।
७५। मां ! मां तुमने समस्त जीवों को त्रिताप से निवृत्त किया।
७६। मां ! तुम श्रीरामकृष्ण संघठन की प्रधान हो।

टेक—मां ! तुम मेरी ब्रह्मशक्तिस्वरूपिणी और सनापनी मां हो।

७७। विरिंचि-शंकर-वन्दिनि मां

७८। जगज्जननि जयदायिनि मां

७९। हृद्गत-रामकृष्ण-मति मां

८०। साक्षात्-वाणी-रूपिणि मां

८१। रामकृष्ण-पर-प्राणा मां

उद्धार—लीला

८२। शुद्धज्ञान-प्रदायिनि मां

७७। मां ! ब्रह्माजी तथा शंकरजी भी तुम्हारी वन्दना में तत्पर हैं।

७८। मां ! तुम जगज्जननी हो, तुमही सबको विजय दान करती हो।

७९। मां ! तुम सर्वदा हृदय में श्रीरामकृष्ण की चिन्ता में मग्न हो।

८०। मां ! तुम (ज्ञान देनेवाली) साक्षात् सरस्वतीस्वरूपिणी हो।

८१। मां ! श्रीरामकृष्णदेवजी तुम्हारे प्राण से भी बढ़कर के श्रेठ थे।

उद्धार-लीला

८२। मां ! तुम निर्मल ज्ञानदान करती हो।

८३। मातृभाव-परिचारिणि मां
८४। प्राणि-मातृ-पदधारिणि मां
८५। जन-संसृति-भयहारिणि मां
८६। क्षान्ति-महागुण-व्यापिणि मां
८७। कान्तिवराभय-दायिनि मां
८८। दश-महाविद्यारूपिणि मां
८९। प्रेमानन्द-सुवर्षिणि मां
९०। सद्गति-सम्मतिकारिणि मां

८३। मां ! मातृभाव से तुमने सबकी परिचर्या (यत्नपूर्वक सेवा) की।

८४। मां ! तुम ने प्राणिमात्र को ही अपने मातृपद में धारण किया था।

८५। मां ! तुमने सबका संसार भय-हरण किया।

८६। मां ! तुम क्षमा इत्यादि महान् गुणों से व्याप्त किया था।

८७। मां ! तुम कान्ति, वर और अभय प्रदान करती हो।

८८। मां ! तुम दशमहाविद्यास्वरूपिणी हो।

८९। मां ! तुम सर्वत्र प्रेम और आनन्द की वर्षा करती हो।

९०। मां ! तुम सबको शुभगति देती हो और सबको शुभमति प्रदान करती हो।

६१।	दुर्बलजन-बलदायिनि	मां
६२।	दुःख-दैन्यभय-नाशिनि	मां
६३।	विद्याभक्ति-विधारिणि	मां
६४।	शांकरि-मुक्तिप्रदायिनि	मां
६५।	सारद पतितपावनि	मां
६६।	शोकतापहारिणि	मां
६७।	खिस्तनिवेदितताारिणि	मां
६८।	आमजाद्मम्मदपावनि	मां

६१। मां ! तुम दुर्बलचित्त में बल प्रदान करती हो ।

६२। मां ! तुम सारे दुःख और दैन्यजनित भयों का नाश करती हो ।

६३। मां ! तुम सारी विद्या और भक्तियों का आधार हो ।

६४। मां ! तुम कैवल्यमुक्ति प्रदान करती हो ।

६५। मां ! तुम पतितपावनी हो ।

६६। मां ! तुम सबके पाप-तापों को हरण करती हो ।

६७। मां ! तुमने खीष्टवंशजात निवेदिता का उद्धार किया ।

६८। मां ! तुमने इस्लामवंशजात दस्यु आमजाद को भी शुद्ध तथा पवित्र किया ।

९९। क्रोड़-अभाजनदायिनि मां
१००। भक्तिप्रेम-प्रदायिनि मां

अन्त—लीला

१०१। सर्वदेवऋषि-पूजित मां
१०२। शुभदेमोक्षदे-शारदे मां
१०३। मातृनामशिक्षाप्रद मां
१०४। भवसागर-पारतरणी मां
१०५। दुर्गुणसुत-अनुकम्पिनि मां

९९। मां ! तुमने सारे भाग्यहीनों को गोदी में उठा जिया।

१००। मां ! तुम भक्ति और प्रेम का वितरण करती हो।

अन्त-लीला

१०१। सारे ऋषि और देवगण तुम्हारी बन्दना करते हैं।

१०२। हे मोक्षकी देनेवाली मां सारदे ! तुम सबका कल्याण करती हो।

१०३। मां ! तुमने सबको पवित्र मातृनाम की शिक्षा दी।

१०४। मां ! तुम भवसमुद्र पार करने के लिये नौका के समान हो।

१०५। मां ! तुम गुणहीन पुत्र के प्रति भी दया करती हो।

१०६। सच्चित्सुखनिधि-रूपिणि मां
१०७। रामकृष्ण-चितिलीना मां
१०८। आनन्द-धाम-प्रस्थिता मां

जयतु शारदा जय जय मां। जयतु शारदा जय जय मां।
रामकृष्ण जय शारदा मां। रामकृष्ण जय शारदा मां॥

१०६। मां! तुम सच्चिदानन्दनिधिस्वरूपिणी हो।

१०७। मां! तुम अन्त में श्रीरामकृष्णरूपी चैतन्य सागर में विलीन हो गई थीं और

१०८। मां! तुमने अपने आनन्दस्वरूप में एकत्व प्राप्त किया।

हे मां शारदे! तुम्हारी जय हो, तुम्हारी जय हो।

श्रीरामकृष्ण और शारदा माता की जय हो।

श्रीरामकृष्ण और शारदा माता की जय हो॥

———

मातृप्रशस्तिः

(सोहिनी-मिश्र-तेवरा)

अनन्तरूपिणि, अनन्तगुणवति
अनन्तनाम्नि गिरिजे माँ।
शिवमन्मोहिनि, विश्वविलासिनि
रामकृष्ण-जय-दायिनि माँ।
जगज्जननि त्रिलोक-पालिनि
विश्वसुवासिनि शुभदा माँ।
दुर्मति-नाशिनि सम्मति-दायिनि
भोग-मोक्ष-सुख-कारिणि माँ।

माँ! तुम अनन्तरूपवती हो तथा अनन्तगुणों से युक्त हो। माँ! तुम अनन्त नामों से युक्त गिरिजा हो। माँ! तुम शिवजी के मन को मोहनेवाली हो। माँ! तुम सारे संसार में (लीला) विलास करने वाली हो। माँ! तुम श्रीरामकृष्णदेवजी को जय देनेवाली हो।

माँ! तुम सारे संसार की जननी हो। माँ! तुम त्रिलोक की पालनकारिणी हो। माँ! तुम इस संसार की उत्तम स्थितिकारिणी तथा कल्याण-कारिणी हो। माँ! तुम दुर्मति को नाश करनेवाली तथा सद्बुद्धि देनेवाली हो। माँ! तुम भोगैश्वर्य, मोक्ष तथा सुख की कारणस्वरूपा हो अर्थात् तुम्हीं से भोगैश्वर्य, मोक्ष तथा सुख प्राप्त होते हैं।

परमे पार्वति सुन्दरि भगवति
दुर्गे भामति त्वं मे माँ
प्रसीद मातः नगेन्द्र-नन्दिनि
चिरसुख-दायिनि जयदे माँ

'देवीस्तुतिः'

(आशावरी-झाँपताल)

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥१॥

माँ ! तुम परम श्रेष्ठ हो ! तुम पार्वती हो ! तुम सुन्दरी तथा भगवती (षडैश्वर्य देनेवाली) हो। हे माँ ! तुम मेरी दीप्तिमती दुर्गादेवी हो। हे नगेन्द्र-नन्दिनि ! हे शाश्वत सुख को देनेवाली तथा जय देनेवाली माँ ! तुम मेरे ऊपर या मुझपर प्रसन्न हो जाओ।

देवीजी को, महादेवीजी को प्रणाम। हर समय मंगल की देनेवाली को प्रणाम। सृष्टि-शक्ति-स्वरूपिणी प्रकृति को प्रणाम। स्थितिशक्ति-स्वरूपिणी भद्रा को प्रणाम। हम एकाग्रचित्त से बार-बार उन को प्रणाम करते हैं ॥१॥

दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥२॥

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥३॥

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥४॥

या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥५॥

दुस्तर भवसमुद्र से पार करनेवाली, शक्तिरूपिणी, सृष्टिकारिणी, ख्याति (प्रसिद्धि) रूपिणी, कृष्णवर्णा तथा धूम्रवर्णा दुर्गादेवीजी को हम सर्वदा प्रणाम करते हैं ॥२॥

जो देवी समस्त प्राणियों में शक्ति के रूप में अधिष्ठान करती हैं, उनको प्रणाम, उनको प्रणाम, उनको प्रणाम ॥३॥

जो देवी समस्त भूतों में क्षमारूपिणी के स्वरूप में अवस्थित हैं, उनको प्रणाम, उनको प्रणाम, उनको प्रणाम ॥४॥

जो देवी सर्वभूतों में लज्जा के स्वरूप में अवस्थित है, उनको प्रणाम, उनको प्रणाम, उनको प्रणाम ॥५॥

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥६॥

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥७॥

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥८॥

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥९॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

जो देवी सर्वभूतों में शान्तिस्वरूपिणी के स्वरूप में अवस्थित, हैं उनको प्रणाम, उनको प्रणाम, उनको प्रणाम ॥६॥

जो देवी सर्वभूतों में लक्ष्मी के स्वरूप में अवस्थित हैं, उनको प्रणाम, उनको प्रणाम, उनको प्रणाम ॥७॥

जो देवी सर्वभूतों में दया के स्वरूप में अवस्थित हैं, उनको प्रणाम, उनको प्रणाम, उनको प्रणाम ॥८॥

जो देवी सर्वभूतों में माता के रूप में अवस्थित हैं, उनको प्रणाम, उनको प्रणाम, उनको प्रणाम ॥९॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

'देवी-अभ्यर्थनम्'

सर्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी ।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः ॥१॥

सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदिसंस्थिते ।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२॥

कला काष्ठादिरूपेण परिणाम प्रदायिनि ।
विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥३॥

हे देवि ! आप सर्वभूतस्वरूपिणी, स्वर्ग तथा मुक्ति को देनेवाली इसी प्रकार से जब आपकी स्तुति की जाती है, तब आपकी स्तुति के लिये और क्या श्रेष्ठ वाक्य हो सकता है ? ॥१॥

हे देवि ! आप सबके हृदय में बुद्धि के रूप में अवस्थित हैं तथा आप स्वर्ग तथा अपवर्ग को देनेवाली नारायणी हैं । आपको हम प्रणाम करते हैं ॥२॥

हे देवि ! आप कला, काष्ठा, (क्षण, मुहूर्तादि सूक्ष्म काल के) रूप से परिणाम की देनेवाली (अर्थात् अखण्ड-कालस्वरूपिणी) हैं और संसार का संहार करने में समर्था शक्तिस्वरूपिणी हैं । हे देवि नारायणी ! आपको हम प्रणाम करते हैं ॥३॥

सर्वमंगलमंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽतु ते ॥४॥

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि ।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥५॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तु ते ॥६॥

हे देवि ! आप सर्वमंगलस्वरूपिणी, सारे अभीष्टों की देनेवाली, एकमात्र आश्रय लेने योग्य, त्रिभुवन की जननी (या त्रिनयना-सूर्यचन्द्राग्निनयना) तथा गौरवर्णा हैं। हे देवि ! नारायणि ! आपको हम प्रणाम करते हैं ॥४॥

हे देवि ! आप सृष्टि, स्थिति और संहार की शक्तिरूपिणी (अर्थात् ब्राह्मी, वैष्णवी, और शिवा) हैं। आप सनातनी तथा त्रिगुणों की आधाररूपिणी (निर्गुणा) हैं, अथच आप त्रिगुणमयी हैं। हे नारायणि ! आपको हम प्रणाम करते हैं ॥५॥

हे देवि ! आप शरणागत, दीन तथा आर्तों की रक्षाकारिणी (सर्वापद् नाशिनी या मुक्ति देनेवाली) और सबके दुःखों का (जन्म मरणादि) नाश करनेवाली हैं। हे नारायणि ! आपको हम प्रणाम करते हैं ॥६॥

आकारमात्रिक—स्वरलिपि

स्वरलिपि के संकेत के लिये—स र ग म प ध न एक सप्तक।

कोमल र=ऋ, कोमल ग=ज्ञ, कड़ि म=ह्म, कोमल ध=द, कोमल न=ण। मात्रा चिह्न=।, एकमात्रा, स=सा, दो मात्रा स=सा । इत्यादि। उच्च (तारा) स्वर का चिह्न रेफ् (र्स), खाद (उदारा) स्वर का चिह्न हसन्त (स्), मुदारा—स्वाभाविक स, र इत्यादि।

श्रीश्रीशारदानवकम्

रामनाम संकीर्तन के 'वर्णानाम' इत्यादि की तरह गान करना होगा।

II गा गा । ह्मा । पा । पा । पा पा पा । पा
स ० र्व सौ ० भा ० ग्य ० सं ० दो ० हे

पा पा । धा । । पा । पा । गा । गा । रा । I
ब्र ह्मा ० न ० ० न्द ० प ० य ० स्वि ० नि ०

रा गा ह्मा पा धा पा पा । पा । पा । पा गा
रा ० म कृ ष्णा ० चि ० ते ० शु ० द्धे ०

रा गा ह्मा पा धा पा पा पा पा । पा । पा गा II
शा ० र दे ० त्वां ० न मा ० म्य ० ह म्

II पा र्सा र्गा र्सा र्सा । र्सा र्सा र्सा र्सा सा सा । र्सा ।
वि वे का ० न ० न्द ० सं ० ध्ये ० यां ० ०

ना ना । धा । धा । धा पा पा पा पा । पा । ।
क्ष मा ० रू ० ० पां ० त प स्वि नी ० म् ० ०
पा ह्मा धा । पा । पा पा गा गा पा गा रा रा गा मा
शा ० र ० दां ० ० दि ० व्य भू ० षां त्वां ० ०
गा । रा । सा सा ना रा । सा सा सा । सा । II
ना ० रा ० य णि स्म रा ० म्य ० ह ० म् ०

इसी क्रम से स्तव का बाकी अंश 'नारायणि नमोऽस्तु ते' तक गाना होगा।

देवी-ध्यानम्

(बहुत-सा अंश रामनाम संकीर्तन के 'नान्या स्पृहा' की तरह गाना होगा)।

II सा । गा रा धा गा । गा पा ह्मा पा पा पा । पा पा
ध्या ० ये द् ० ह् ० द ० म् बु जे दे ० वीं •
ह्मा पा पा ना । धा पा मा । । गा । गा । ।
त रु णा रु ० ण वि ग्र ० ० हा ० म् ० ०
रगा गा ह्मा पा धा । ना धा पा मा गा । रा गा ।
व रा ० म य ० क रां ० शा ० न्ता म् ० ०
रा मा गा पा पा । । रा रा रा रा रा सा सा । । II
स्मि तो ० त्फु ० ० ल्ल मु खा ० म्बु जा ० म् ० ०

II पा र्सा । र्सा र्सा र्सा । र्सा र्सा र्सा र्सा । र्सा । ।
स्थ ल ० प ० द्म ० प्र ती ० का ० श ० ०

ना ना ना ना । ना । धा धा । ह्मा धा पा । पा
पा दा ० म्मो ० ज ० सु शो ० भ ० ना ० म्

सां नार्सा र्सां सां ना धा पा मा गा । रा रा रा ।
शु क्ला ० म्ब र ध ० रां ० ० धी रा म् ०

रा गा रा मा गा पा । रा रा रा रा सा सा । II
ल ज्जा ० प ट ० ० वि भू षि ता ० म् ०

"प्रसन्नां" इत्यादि कड़ी पहली कड़ी की तरह और "श्वेत पद्मासनां" इत्यादि दूसरी कड़ी की तरह गेय है।

श्रीमत्याः शारदा देव्याः स्तोत्रम्

("भीमपलश्री" स्वर में गान करना होगा)।

सा सा रण्ा ण्ा सा सा ज्ञा । ज्ञा मा पा पा पा पा पा ।
प्र कृ ति म् प र मा ० म म यां व र दा म् ०

पा पा मा ज्ञा ज्ञा ज्ञा म पा पा मा । ज्ञा रा । सा । I
न र रू प ध रा म् ज न ता ० प ह रा म् ०

पर्सा र्सा र्सां र्सा र्सां णा ध पा धा र्सा र्णां । धा र्सा ।
श र णा ग त से व क तो ० ष क री म् ०

पा पा मा । ज्ञा ज्ञा मा पा पा मा । ज्ञा । रा रा सा सा II
प्र ण मा ० मि प रा म् ज न नी म् ० ज ग ता म्

पहली कड़ी दो बार गाना होगा, और बाद में दूसरी कड़ी ('गुणहीन सुतान्' इत्यादि) और तीसरी कड़ी ('विषयं कुसुमं' इत्यादि) "प्रकृति परमा" इत्यादि की तरह गाना होगा।

II पा पा पा पा पा मा पा ज्ञा । मा । णा णा धा ।
कृ पा म् कु रु म हा दे ० वि ० सु ते षु ०

मा पा णा । धा पा । पा पा मा ज्ञा ज्ञा ना । पा ।
प्र ण ते ० षु च च र णा श्र य दा ० ने ०

पा ज्ञा मा पा पा । मा ज्ञा ज्ञा रा सा । I
न कृ पा म यि ० न मो ऽ स्तु ते ०

णा सा ज्ञा ज्ञा मा मा पा पा । णा णा धा पा धा णा
ल जा प टा वृ ते नि त्यं ० शा र दे ज्ञा न दा

। धा पा र्सा । र्सा र्सा । र्सा णा णा धा मा
० यि के, पा ० पे भ्यो ० नः स दा र क्ष

ज्ञा मा पा पा मा ज्ञा ज्ञा रा सा । II
कृ पा म यि न मो ऽ स्तु ते ०

षष्ठ कड़ी— ('रामकृष्ण गत-प्राणां' इत्यादि) चौथी कड़ी के ('कृपां कुरु' इत्यादि की) तरह गाना होगा और सातवीं कड़ी ('पवित्रं चरितं इत्यादि) पाँचवीं कड़ी ('लज्जापटावृते नित्यं' इत्यादि की) तरह गाना होगा।

II पा ना ना ना ना ना ना पा ना ना र्सा र्सा र्सा ा र्सा I
दे वी म् प्र स न्नां ० प्र ण ता र्ति ह न्त्री ० म्

ग्गा ग्गा ग्गा धा पा पा ज्ञा मा पा पा म्ज्ञा ज्ञा रा सा ा I
यो गी न्द्र पू ज्या म् यु ग ध र्म पा ० त्री ० म्

र्सा र्सा र्म्ज्ञा र्रा र्सा र्सा ग्गा ग्गा धा धा मा पा पा पा पा I
ता म् शा र दा म् भ क्ति वि ज्ञा न दा त्री ० म्

ज्ञा मा पा पा पा ा ज्ञा मा पा पा पा म्ज्ञा रा सा ा II
द या स्व रू पा ० म् प्र ण मा मि नि त्य म् ०

नवीं और दसवीं कड़ी ('स्नेहेन बध्नासि') इत्यादि और ('प्रसीद मातर्विनयेन')—इत्यादि पहली कड़ी की तरह गाना होगा। एगारहवीं कड़ी ('जननीं शारदां' इत्यादि) 'देवीं प्रसन्नां·····युगधर्म-पात्रीं''—इस अंश की तरह गाना होगा।

गा गा गा गा ह्मा गा ह्मा ा वा पा पा गा रा रा रा रा ,ना
ॐ स र्व दे व दे वी ० स्व रू पि ण्यै श्री शा र दा दे
रा रा सा ा
व्यै न म ०

श्रीश्रीशारदानामामृतम्

0 १ + ३
II पा ा रा ा | गा ा मा मा | गा ा रा सा | ना ा ा ना I
त्व म् मे ० ब्र ह्म ० स ना ० त नि र्मा ० ० ०

० १ + ३
प्रा ा न् ा | सा रा गा मा | गा ा रा रा | सा ा ा ा II
ब्र ह्म श० क्ति० म य रू पि णि० माँ० ० ०

० १ + ३
II सा ा सा रा | रा रा रा गा | म ा पा पा | पा ा ा ा
स० च्चि त् सु ख यु त रू० पि णि माँ० ० ०

० १ + ३
रा ग पा ा | मा मा मा मा | गा रा गा रा | सा ा ा ा II
स ह स्रा० र० शि व सं गि० नि माँ० ० ०

० १ + ३
II मा मा पा पा | ना ा ना ा | सी ा र्सी ना | सी ा ा ा ा I
अ गा० ध ली० ० ला रू० पि णि माँ० ० ० ०

र्सी र्सी गी मी | गी र्सी र्सी र्सी | सी ना र्सी र्सी | सी ा ा ा II
चि न् म य रू प वि० ला सि नि० माँ० ० ०

II र्सी र्सी र्सी सी | णा णा धा पा | धा पा मा गा | रा ा ा ा
आ द्या श क् ति ली० ० ला म यि० माँ० ० ०

रा रा पा पा | मा ा मा मा | गा रा रा गा | सा ा ा ा II
चि ति सु ख दा० यि नि ता रि० णि माँ० ० ०

II रा रा रा रा | रा रा रा गा | मा ा पा पा | पा ा ा ा
दु र् ग ति दु र् म ति ना० शि नि माँ० ० ०
रा रा पा पा | मा मा मा मा | गा रा गा रा | सा ा ा ा II
म हा० का ल हृ दि० न० र्ति नि माँ० ० ०

इसी क्रम से—समग्र 'शारदानामामृतम्' गाना पड़ेगा। जहां पर 'त्वं मे ब्रह्मसनातनि माँ' इत्यादि फिर से गाने का निर्देश है—वहां पर 'त्वं मे ब्रह्म सनातनि माँ' के बाद तीसरी कड़ी 'अगाध लीला-रूपिणि माँ' इत्यादि दो लाइन की तरह ऊँचे स्वर से गाकर, उस क्रम को सर्वत्र अपनाना चाहिये। अन्त में १०७ और १०८ लाइन दो बार करके गाना पड़ेगा।

मातृप्रशस्तिः

सोहिनी-मिश्र-तेवरा

+	२	३
II मधना सां सां	ऋां ऋां	सां सां
अ न न्त	रू ०	पि णि
+	२	३
ना धा धा	ना धा ।	मा मा I
अ न न्त	गु ण०	व ति
+	२	३
मा मा मा	गा गा	मां ।
अ न न्त	ना ०	म्नि ०
+	२	३
मा धा ना	सां सां सां	नधा नसां II
गि रि जे	मां ० ०	० ०

+	२	३
II गां गां गां	गां ।	गां गां
शि व म	न्मो ०	हि नि
+	२	३
ह्रीं ह्रीं गां	गां । ऋं	सां सां
वि श्व वि	ला ० ०	सि नि
+	२	३
ना धा मा	गा ।	मा मा
रा म कृ	ष्णा ०	ज य
+	२	३
मा धा ना	सां सां ऋं	नधा नसां II
दा यि नि	मां ० ०	० ०

बाद में 'अनन्तरूपिणि'—की तरह 'गिरिजे मां' तक गाना होगा।

+	२	३
II मा मा मा	धा ।	धा ना
ज ग त	ज ०	न नि
+	२	३
सां सं ऋं सां	सां । ।	सां सां I
त्रि लो क	पा ० ०	लि नि

+	२	३
ना ना धा	मा ा	मा मा
वि श्व सु	वा ०	सि नि
+	२	३
धा धा ना	सां सां	ऋां सां सां
शु भ दे	मां ०	० ० ०

इसी क्रम के अनुसार—'दुर्गति नाशिनि' इत्यादि 'शिवमन्मोहिनी' की तरह गाकर पुनः 'अनन्तरूपिणि' इत्यादि दो लाइन गाना पड़ेगा। बादमें—"परमे पार्वति" इत्यादि दो लाइन—'जगज्जननि' इत्यादि दो लाइन की तरह गाकर 'प्रसीद मातः' इत्यादि दो लाइन 'शिवमन्मोहिनि' इत्यादि दो लाइन की तरह गाकर—अन्त में 'अनन्तरूपिणि' इत्यादि दो लाइन गाकर के समाप्त करना होगा।

देवी-स्तुतिः

नमोदेव्यै इत्यादि

आशावरी—झाँपताल

+	२	०	३	
II सा रा	मा मा पा	सां दरा	पा ा ा	
न मो	दे ० व्यै	म हा	दे व्यै ०	
+	२	०	३	
मा पा	णदा पा मा	ज्ञा रा	सा ा ा	II
शि वा	यै ० स	त तं	न मः ०	

	+	२	०	३
II	र्सर्जा र्ज्ञा	र्रा र्सा ा	णा र्सा	णदा पा ा I
	न म:	प्र क्र ०	त्यै म	द्रा यै ०
	+	२	०	३
	मा पा	णदा पमा मा	ज्ञा रा	रा सा सा II
	नि य	ता: प्र ण	ता: स्म	ता ० म्

पुनः 'नमो देव्यै·····नमः' तक गाकर बाद में 'दुर्गायै' इत्यादि कड़ी गान करना होगा।

	+	२	०	३
II	मा पा	णा दा णा	र्सा र्सा	र्सा र्सा र्सा
	दु र्गा	यै ० दु	र्ग पा	रा यै ०
	+	२	०	३
	ज्ञा र्रा	र्सा र्सा र्सा	णा र्सा	ण्णा दा णापा I
	सा रा	यै ० स	र्व का	रि ० ण्यै
	+	२	०	३
	ज्ञा र्रा	र्सा ण्णा र्सा	णा ा	सां णादा पा I
	ख्या त्यै	त थै ०	व ०	क्र ष्णा यै
	+	२	०	३
	मा पा	णदा पा रा	ज्ञा रा	सा सा ० II
	धृ त्रा	यै ० स	त तं	न मः ० (२)

इसके बाद पुनः 'नमोदेव्यै·····नमः'—तक गाकर तीसरी कड़ी "या देवी सर्वभूतेषु·····नमो नमः" तक गाना समाप्त करके फिरसे पहली कड़ी की पहली लाइन तक गाकर चौथी कड़ी गाना पड़ेगी। पुनः पहली कड़ी की पहिली लाइन गाकर पाँचवीं कड़ी, और इसी क्रम के अनुसार नवीं कड़ी तक गाना पड़ेगा।

\+ २ ० ३
II मा पा णा दा णा र्सा र्सा र्सा र्सा र्सा
या ० दे ० वी स र्व भू ते षु

\+ २ ० ३
र्ज्ञा र्रा र्सा र्सा सा णा र्सा णा दा पा I
श क्ति रू पे ण स म् स्थि ता ०

\+ २ ० ३
र्सा र्सा र्सा र्सा ा णा दा पा पा ा
न म स्त स्यै ० न म स्त स्यै ०

\+ २ ० ३
मा पा णदा पा ा मा ज्ञा रा सा ा II
न म स्त स्यै ० न मो न मः ० (३)

इसके बाद "नमो देव्यै महादेव्यै" तक इत्यादि गाकर क्रम अनुसरण करना पड़ेगा।

"देवी-अभ्यर्थनम्"

(चण्डी के 'सर्वमंगलमंगल्ये' के स्वर से गाना होगा—वेहाग)

II गा मा पा ना ना ना र्सा र्सा र्सा र्सा ना ा ा
स र्व भू ता ० य दा ० दे वी ० ० ०
स र्व मं ग ल मं ग ल्ये ० ० शि ० वे

ना ना धपा ह्मा पा पा ह्मा गा मा गा गा मा पा ना I
स्व र्ग ० मु क्ति ० प्र दा ० यि ० नि ० ०
स र्वा ० र्थ सा ० धि ० के श र ण्ये ० ०

II सां ना नां पा पा ह्मगा मा गा गा गा मा पा पा
त्व ० म् स्तु ० ता ० स्तु ० त ये का वा
० ऋ ० म्ब के गौ ० रि ० ० ना रा ०

मा मा गा गा गा गा रा रा सा सा सा II
म व न्तु ० प र मो ० क्त यः ०
य णि ० न मो ० ऽ स्तु ० ते ०

II सा पा पा पा पा पा पा पा मगा गा मा पा ना
स र्व स्य बु द्धि ० रू ० पे ० ण ० ० ०
सृ ष्टि ० स्थि ० ति वि ना ० शा ० ना ० म्

पा पा ना ना । पा ह्मपा मा गा गा मा पा ० ना
ज न स्य ० हृ ० दि ० स म् स्थि ० ते ०
श ० क्ति ० भू ० ते ० स ना ० त ० नि

सां सां ना सां ना पा । मा मा गा गा गा गा
स्व र्गा ० प व ० र्ग दे दे ० वि ० ०
गु णा ० श्र ० ये ० ० गु ण म ये ०

पा पा मा पमा गा गा गा गा गा रा रा सा । सा II
ना रा ० य णि ० न मो ऽ स्तु ० ते ० ०
ना रा ० य णि ० न मो ऽ स्तु ० ते ० ०

II गा मा पा ना ना ना ना ना सां गां रां सां सां सां
क ला ० को ष्ठा दि रू पे ० ० ण ० ० ०
श र णा ० ० ग त ० दी ० ना ० तं ०

सां सां ना ना ना धा पा ना ना सां ा ना ना ना I
प रि ० षा ० म प्र दा ० यि ० नि ० ०
प रि त्रा ० ण प रा ० य ० ० णे ० ०

सां सां सां ना पा पा ना पा ह्मा गा मा गा गा
वि ० श्व स्यो ० प ० र तौ श क्ते ० ०
स र्व स्या ० ति ० ह रे ० ० दे ० वि

पा मा गा गा पा मा गा गा गा रा ा सा सा
ना ० रा ० य णि ० न मो ऽ ० स्तु ते
ना ० रा ० य णि ० न मो ऽ ० स्तु ते

II सा सा ना पा ना सा सा सा सा सा सा सा I
ज य ना ० रा य णि न मो ऽ स्तु ते

गा मा पा ना सां गंरां सां ना पा ह्मा गा मा गा I
ज य ना रा ० य णि न मो ऽ स्तु ० ते

गा गा गा मा पा मा मा मा ा गा गा गा रा सा II
ज य ना ० रा ० य णि ० न मो ऽ स्तु ते

* शुभम् *

श्रीश्रीरामकृष्ण-शारदानामामृतम्

परिशिष्ट

श्रीरामकृष्ण—आरात्रिक *

स्वामी—विवेकानन्द-रचित

खाम्बाज-मिश्र-चौताल (ताल-फरेता)

खण्डन-भव-बन्धन, जग-वन्दन बन्दि तोमाय।
निरञ्जन, नररूपधर, निर्गुण गुणमय॥

मोचन-अघदूषण, जगभूषण, चिद्घनकाय।
ज्ञानाञ्जन-विमल-नयन, वीक्षणे मोह जाय॥

भास्वर भाव-सागर चिर-उन्मद-प्रेम-पाथार।
भक्तार्जन-युगलचरण, तारण-भव-पार॥

जृम्भित-युग-ईश्वर, जगदीश्वर योग-सहाय।
निरोधन समाहित-मन, निरखि तव कृपाय॥

---

* श्रीरामकृष्ण-आरात्रिक, श्रीरामकृष्ण-स्तोत्रम् (४) और श्रीश्रीरामकृष्ण-प्रणाम—ये सब रचनायें विवेकानन्द-सोसाइटी, कलकत्ता के सेक्रेटरी की अनुमति से प्रकाशित हुई हैं—प्रकाशक।

भञ्जन-दुखगञ्जन, करुणाघन, कर्मकठोर।
प्राणार्पण-जगत-तारण, कृन्तन-कलिडोर॥

वंचन-कामकाञ्चन, अतिनिन्दित-इन्द्रिय-राग।
त्यागीश्वर, हे नरवर, देहि पदे अनुराग॥

निर्भय, गत-संशय, दृढ़निश्चय मानसवान्।
निष्कारण-भकत-शरण, त्यजि जाति-कुलमान॥

सम्पद तव श्रीपद, भवगोष्पद-वारि यथाय।
प्रेमार्पण, समदरशन, जगजन-दुख जाय॥

नमो नमो प्रभु! वाक्य-मनातीत,
मनोवचनैकाधार;
ज्योतिर ज्योति, उजल-हृदि-कन्दर,
तुमि तमभंजन-हार।

धे धे धे, लंग रंग भंग, बाजे अंग संग मृदंग,
गाइछे छन्द भकतवृन्द, आरति तोमार।

(जय जय आरति तोमार, हर हर आरति तोमार,
शिव शिव आरति तोमार॥)

श्रीरामकृष्णस्तोत्रम्—१

(स्वामिविवेकानन्द-रचितम्)

ॐ—ह्रीं ऋतं त्वमचलो गुणजित् गुणेड्यः
न—क्तन्दिवं सकरुणं तव पादपद्मम् ।
मो—हङ्कषं बहुकृतं न भजे यतोऽहं
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ! ॥१॥
भ—क्तिर्भगश्च-भजनं भवभेदकारि
ग—च्छन्त्यलं सुविपुलं गमनाय तत्त्वम् ।
व—क्त्रोद्धृतन्तु हृदि मे न च भाति किंचित् *
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ! ॥२॥

---

*पाठान्तर—वक्त्रोद्धृतोऽपि हृदये न मे भाति किंचित् ।

ॐ ह्रीं, तुम सत्य, अचल, त्रिगुणजयी और दिव्य गुणों के द्वारा प्रशंसनीय हो; जिस कारण से मैं तुम्हारे मोह-विनाशक पूजनीय चरण-कमलों का व्याकुल भाव से दिन-रात भजन नहीं कर रहा हूँ, अतएव हे दीनबन्धो, तुम ही मेरे आश्रय हो ॥१॥

संसार-बन्धन-विनाशी भक्ति-वैराग्यादि एवं उपासना की सहायता से मानव अति महान् ब्रह्मतत्त्व तक पहुँचने में समर्थ होता है; किन्तु इस प्रकार के वाक्य मेरे मुख से उच्चारित होने पर भी हृदय में इनका कुछ प्रभाव नहीं पड़ता; अतएव हे दीनबन्धो, तुम ही मेरे आश्रय हो ॥२॥

ते—जस्तरन्ति तरसा त्वयि तृप्ततृष्णाः*
रा—गे कृते ऋतपथे त्वयि रामकृष्णे †
म—र्त्यामृतं तव पदं मरणोर्मिनाशं
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ! ॥३॥

कृ—त्यं करोति कलुषं कुहकान्तकारि
ष्णा—न्तं शिवं सुविमलं तव नाम नाथ ।
य—स्मादहं त्वशरणो ‡ जगदेकगम्य
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ! ॥४॥

हे रामकृष्ण, सत्य के पथ-स्वरूप तुममें अनुराग होने से, मनुष्य तुमको ही प्राप्तकर पूर्णकाम होता है एवं शीघ्र ही रजोगुण को अतिक्रम करता है; मृत्युरूप तरंग के विनाशकारी तुम्हारे चरण मर्त्यजगत् में अमृतस्वरूप है; अतएव हे दीनबन्धो, तुमही मेरे आश्रय हो ॥३॥

हे नाथ, तुम्हारा माया-संहारकारी मंगलमय अति पवित्र 'ष्ण' यह अक्षरान्त (रामकृष्ण) नाम पाप को भी पुण्य में परिणत कर देता है; तुम संसार के एकमात्र आश्रय हो; चूँकि मैं निराश्रय हूँ, इसलिए हे दीनबन्धो तुम्ही मेरे आश्रय हो ॥४॥

---

* तेजस्तरन्ति त्वरितं त्वयि तृप्ततृष्णाः (पाठान्तर)

† रागं कृते ऋतपथे (पाठान्तर)

‡ अशरणे (पाठान्तर)

श्रीरामकृष्णस्तोत्रम्—२

आचण्डाला-प्रतिहतरयो यस्य प्रेमप्रवाहः
लोकातीतोऽप्यहह न जहौ लोककल्याणमार्गम् ।
त्रैलोक्येऽप्यप्रतिम-महिमा जानकी-प्राणबन्धः
भक्त्याज्ञानं वृतवरवपुः सीतया यो हि रामः ॥१॥

जिनका प्रेमस्रोत चण्डाल पर्यन्त अप्रतिहत वेग से प्रवाहित हुआ अर्थात् जो चण्डाल के प्रति प्रेम-भाव रखने में भी कुण्ठित नहीं हुए, आहा ! अलौकिक स्वभाव होने पर भी जिन्होंने लोक-कल्याण के मार्ग का परित्याग नहीं किया (अर्थात् जो सर्वदा लोक-कल्याण की चिन्ता और अनुष्ठान में ही नियुक्त थे), स्वर्ग, मर्त्य और पाताल—इन तीनों लोकों में ही जिनकी महिमा की तुलना नहीं है, जो सीता के प्राणस्वरूप थे, जिन्होंने भक्तिसहित श्रेष्ठ ज्ञान की कल्याण-मूर्ति धारण की थी; (उनको मैं भक्तिपूर्वक प्रणाम कर रहा हूँ) ।

स्तब्धीकृत्य प्रलयकलितन्वाहवोत्थं महान्तं
हित्वा रात्रिं प्रकृतिसहजामन्धतामिस्रमिश्राम् ।
गीतं शान्तं मधुरमपि यः सिंहनादं जगर्ज
सोऽयं जातः प्रथितपुरुषो रामकृष्णस्त्विदानीम् ॥२॥

कुरुक्षेत्र-युद्ध के समय जो भयानक प्रलय-तुल्य हुङ्कार उठा था, उसको स्तब्ध करके एवं (अर्जुन की) घोरतर स्वाभाविक अन्धतमः—स्वरूप अज्ञान-रजनी को (जिन्होंने) दूर कर दिया, शान्त और मधुर गीत (गीताशास्त्र) जिन्होंने सिंहनाद रूप में गर्जन कर गाया था (सुनाया था)—वे ही विख्यात पुरुष इस समय (श्री) रामकृष्ण रूप में जन्में हैं ।

(उनके चरणों में मैं श्रद्धासहित प्रणाम करता हूँ)

———

श्रीरामकृष्णस्तोत्रम्—३

नरदेव देव जय जय नरदेव

शक्तिसमुद्रसमुत्थतरङ्गं

दर्शितप्रेमविजृम्भितरङ्गं

संशयराक्षसनाशमहास्त्रं

यामि गुरुं शरणं भववैद्यं

नरदेव देव जय जय नरदेव

॥१॥

हे नरदेव देव ! तुम्हारी जय हो। जो शक्तिरूप समुद्र से उत्थित तरङ्गस्वरूप हैं, जिन्होंने प्रेम की नाना लीलाओं को दिखाया है, जो सन्देहरूपी राक्षस का विनाश करने के लिये महास्त्र-स्वरूप (हैं), (जो) संसाररूपी रोग के चिकित्सक (हैं) उन्हीं गुरुदेव का आश्रय (मैं) ग्रहण कर रहा हूँ। हे नरदेव देव, तुम्हारी जय हो।

अद्वयतत्त्वसमाहितचित्तं
प्रोज्ज्वलभक्तिपटावृतवृत्तं
कर्मकलेवरमद्भुतचेष्टं
यामि गुरुं शरणं भववैद्यं
नरदेव देव जय जय नरदेव ॥२॥

जिनका चित्त अद्वय ब्रह्म में समाहित (था), जिनका चरित्र अतिश्रेष्ठ भक्तिरूपी वस्त्र के द्वारा आच्छादित (था) (अर्थात् जिनके अन्दर ज्ञान था एवं जिनके बाहर भक्ति थी), जिन्होंने शरीर द्वारा क्रमागत लोकहितार्थ कर्म किया (था), जिनका कार्यकलाप अद्भुत (था), संसाररूपी रोग के चिकित्सक उन्हीं गुरु (देव) का आश्रय (मैं) ग्रहण कर रहा हूँ। हे नरदेव देव ! तुम्हारी जय हो।

श्रीरामकृष्णस्तोत्रम्—४

सामाख्याद्यैर्गीतिसुमधुरैर्मेघगम्भीरघोषै-
र्यज्ञध्वान-ध्वनितगगनैर्ब्राह्मणैर्ज्ञातवेदैः ।
वेदान्ताख्यैः सुविहित-मरवोद्भिन्न-मोहान्धकारैः
स्तुतो गीतो य इह सततं तं भजे रामकृष्णम् ॥

जिन वेदतत्वज्ञ ब्राह्मणगणों ने यज्ञस्थल में मन्त्रोच्चारण द्वारा पूरे आकाशमण्डल को मुखरित किया था, विधिपूर्वक यज्ञ सम्पादन के फलस्वरूप जिनके शुद्ध हृदय से वेदान्त वाक्य द्वारा भ्रम और अज्ञानान्धकार दूरीभूत हो गया था, उन लोगों ने मेघ के समान गम्भीर और सुमधुर स्वर में सामवेद आदि के द्वारा जिनकी स्तुति की है, जिनकी महिमा का कीर्तन किया है—मैं सर्वदा उन्हीं श्रीरामकृष्ण का भजन करता हूँ ।

श्रीरामकृष्ण-प्रणामः

ॐ स्थापकाय च धर्मस्य सर्वधर्मस्वरूपिणे ।
अवतार-वरिष्ठाय रामकृष्णाय ते नमः ॥

धर्म के संस्थापक, सर्वधर्मस्वरूप, और अवतारों में श्रेष्ठ हे रामकृष्ण, (मैं) तुम्हें प्रणाम करता हूँ ।

(जय-जयन्ति—झाँपताल)

तुम ब्रह्म रामकृष्ण, तुम कृष्ण, तुम राम,
तुम विष्णु, तुम जिष्णु प्रभविष्णु प्राणाराम ।
तुम आधेय, आधार, तुम ब्रह्मनिराकार,
तुम नररूपधर, विजित-कनक-काम ॥
अपार करुणा-सिन्धु, तुम देव दीनबन्धु
मांगे 'इन्दु' कृपाविन्दु, चरण में करे प्रणाम ॥
(अनुवाद)—इन्दु

भीमपलश्री—झाँपताल

रामकृष्ण नाम गावो मन मधुरे ।
गावो मन अन्तरे ॥
रामनाम कृष्णनाम रामकृष्णनाम
पाप-ताप हरे ॥ (गावो मन अन्तरे)
मंगल भानु रूप में उदित हुए पुण्य-भूमि में
सब धरम भाव समान करे ।
वैकुण्ठचारी कैलाश विहारी (गावो मन अन्तरे)
प्रेम पुण्य रूप से भक्ति मुक्ति दान करे ॥
याचे दीन सेवक जग में ज्ञान प्रेम
शान्ति वर्षण करे ।
(रामकृष्ण नाम गावो मन अन्तरे) ॥
—स्वामी अपूर्वानन्द

भीमपलश्री—झाँपताल

धन्य धन्य रामकृष्ण, पतित-पावन हे।
सुधामय नाम तव, मुक्ति-कारण हे॥
दीन दुखी वेष धरि, आये थे नरहरि।
धर्म-समन्वयकारी, अस्पृश्य-तारण हे॥
पुजारी ब्राह्मण होय, काली-पद-कमल पूजि,
मातृ-मन्त्र से भर दिया धरणी और गगन हे।
जय जय रामकृष्ण, जो राम वही कृष्ण,
विश्व के मन्दिर-गिरजा में तुम्हारी अर्चना हे॥
(अनुवाद)—स्वामी अपूर्वानन्द

असवारी—एकताल

नमो नमो देव, नमो नरदेव, नमो भवभयहारी।
भुवन-पावन नमो नारायण, रामकृष्ण-रूपधारी॥
मद-गर्वित-दुष्ट-दलन, साधु-सज्जन-पालन,
धर्मस्थापन कारन, युगे युगे अवतारी॥
दक्षिणेश्वर में कितनी साधना, जीवोद्धार हेतु
कैसी भावना,
दीन-दुःखी देख आँसू बहावें, जगजन-दुःखहारी।
सब जीवों में एक नारायण, मन्दिरों में जिनका पूजन,
सिखाया नरको यह नव साधन, वितरित किया प्रेमवारि॥
(अनुवाद)—स्वामी चण्डिकानन्द

सूर-भैरवी—ताल-दादरा

सकल देश के भगवान, शरण तुम्हारी आये।
तुम्हारे काम में, तुम्हारे ध्यान में मानोजीवन जाये !
सभी जाति के ऋषिजन, सभी नत तब चरण।
धन्य करो जीवन हमारे, दीजे पद-छाय ! !
हम सभी हैं एक जाति, एक ही भगवान।
एक ही स्वर में बंध जायें, हम सभी के प्राण ! !
सत्य हमारा ध्रुवतारा, नहीं लक्ष्य खोवन-हारा।
सफल होय सब जीवन, सत्य सेवा पाय !

(अनुवाद)—स्वामी चण्डिकानन्द

रामकृष्ण हैं युग-अवतार,
सर्व धर्म के वे ही सार।
सब जीवों के तारण-हार,
निराधार के वो आधार॥
मध्य रात्रि एकान्त-वास में,
रामकृष्ण जप श्वास श्वास में।
एकाग्र हो तू बैठ ध्यान में,
अनुभूति में अमृत-धार॥

सृष्टि, स्थिति, लय उनके हाथ,
उनके हाथ में दे दो हाथ।
कभी न छोड़ो उनका साथ,
सार्थक जीवन नैया पार॥
शुद्धा भक्ति से कर लो प्यार,
अनहद नाद की सुनो झंकार।
शरणागति में साक्षात्कार,
निराकार वे हैं साकार॥
जब जीव-जगत् में हा-हाकार,
तब रामकृष्ण की हो ललकार।
उनकी ऐसी कृपा अपार,
नवजीवन दें नई बहार॥

—दामोदर

(दूमन—कहरवा)

मज मन रामकृष्ण अविराम,
ब्रह्मरूप वे अलखनिरंजन, चिन्मय वे अभिराम।
सत्त्वमूर्ति वे, ज्वलंत शक्ति वे, युग-युग के अवतार॥
वेदातीत वे, वाक्यातीत वे, सर्व धर्म के सार।
भक्तराज वे, ज्ञानसिन्धु-वर, सर्व भाव आधार॥
जोड़ के बन्धन चरण-कमल से, हो भवसागर पार॥

—रवि

(कृप सारंग–त्रिताल)

मेरे रामकृष्ण तुम आओ रे,
मधुर छबि नैनन में राखी, अब कैसे विसराऊँ रे।
सुनत चहूँ और देखत तुमही को, फिर भी मैं मरमाऊँ रे॥
बन्द अखियाँ कर डोलूँ इत-उत' कहीं चैन नहीं पाऊँ रे।
कृपा करो प्रभु दीन दास पर, हृदय प्रेम भर पाऊँ रे॥

—रवि

मालकोष–झाँपताल

श्रीराम तुम्हीं, कृष्ण तुम्हीं, परब्रह्म नारायण, तुम्हीं आदिशक्ति।
तुम्हीं सृजन-पालन-संहार-कर्ता, शान्ति विधारण, तुम्हीं ब्रह्मज्योति॥
जगन्नाथ प्रकट हो इस पुण्य-भूमि में, सिखावत सब धर्म समज्ञान प्रतीति।
धन्य रामकृष्ण तुम दयाल भगवान, देहु प्रभु ज्ञान-धन और शुद्ध भक्ति॥

—स्वामी अपूर्वानन्द

श्रीशारदा देवी विषयक भजन गान

झुमुर-मिश्र–दादरा

बैकुण्ठलोक से लक्ष्मी आईं इस पृथ्वी की मिट्टी में,
(जयरामबाटी में)
(वह) ग्राम भी धन्य हुआ माँ की चरण-धूलि में
(जयरामबाटी में)
बारह सौ साठ के आठ पौष में माँ का आविर्भाव,
माँ आईं दूर करने को त्रिताप शोकताप,
भक्तों के लिये जन्म लिया दुःखी के घर में,
(जयरामबाटी में)

पति पाया जगद्गुरु रामकृष्ण नाम,
उनके चरण शरण पाने से मिलता परम धाम
(है मिलता परमधाम)

रामचन्द्र उनके पिता श्यामादेवी माता,
दामोदर के तट पर आईं जगन्माता,
महामाया आईं हैं, ब्राह्मणी के रूप में,
(जयरामबाटी में)

अनुवाद—अभयपद बन्दोपाध्याय

मालकोश—तेओरा

('डमरू हरकरे बाजे बाजे'—स्वर)

सर्वमङ्गला निखिल-जननि
जय माँ शारदा शुभदा वरदा
सदा अशरण-शरणदायिनी ॥
मातृमूरति करुणारूपिणी
तुम ही कमला तू ही वीणापाणि
श्रीराधा श्रीसीता तू ही वेदमाता
हे माँ श्यामासुता तू ही नारायणी ॥

महिमा तुम्हारी करने प्रचार मानव-देहधर युग-अवतार।
करके पूजन तुम्हारे श्री चरण मातृ-नाम रटे दिवस-रजनी

जगद्धात्री त्रिगुणधारिणी
गुणातीता तुम त्रिलोकतारिणी
अभयदायिनी अमरपालिनी
दो दो माँ श्रीपदतरणी ॥

अनुवाद—स्वामी चण्डिकानन्द

दरबारी-कनाडा—झाँपताल

सबकी माँ होइ आज, तुम कौन धरा में आईं ।
सबके दुःख से सदा, नयन-अश्रु बहाई ॥
देश जाति भेद नहीं, चरणों में सबकी ठाँईं ।
पापी तापी सब तुम, बच्चा रूप में गोद उठाईं ॥
सब देश सब जाति, मातृ नाम से माति जाई ।
तुम्हारी करूँ बिनती, सब दुःख दूर होई ॥
शिक्षा देने माँ नाम की, माँ होइ जग में आईं ।
सिखाओ मुझे भी माई, मैं हूँ सन्तान तुम्हारी ॥

अनुवाद—स्वामी चण्डिकानन्द

बागेश्री—झाँपताल

ब्रह्ममयी माँ शारदा, गोलोक त्यजि आईं ।
गुप्त ब्राह्मणी रूप में, आर्तों का कल्याण कीं ॥

षोड़शी कमलारूपिणी, पृथ्वीं में उदित हुईं ।
सब सिद्धि की दात्री हो, मातृ-नाम धन्य करनि ।।
जय पतित-पावनी, म्लेच्छ-यवन-तारिणी ।
महाविद्या-स्वरूपिणी, रामकृष्ण-शक्तिरूपिणी ।।
रो रही है सन्तान दुर्बल, जिसका सम्बल है अश्रुजल ।
शारदे शुभ दे जय दे, सन्तान को लो अपनी गोदी ।।

अनुवाद—स्वामी अपूर्वानन्द

सिन्धु-विजय—तेओरा

('ऐ जे देखा जाय आनन्दधाम'—स्वर)

आई आई रे—
आई आई अब तू जननी आई
रूप प्रभा से कृपा प्रकाश से विश्वभुवन लुभाई
जननी आई ।।

आद्या शक्ति महाविद्या महाकालिका महामाया,
महासरस्वती शारदेश्वरी श्यामा-तनया बन के आई ।
जगत-जननी प्रणत-पालिनी, अनाथ-अशरण-तारिणी,
सकल-सिद्धि-प्रदायिनी माँ, श्रीरामकृष्ण-सङ्गिनी ।
देती अयाचित भकति मुकति
साधु पातकी भेद नहीं
सर्व देव-देवी याचित पद में
निपीड़ित जन-सकल लाई ।।

अनुवाद—स्वामी चण्डिकानन्द

भजन—कहरवा

प्रणाम लो माँ सरस्वती
नहीं चाहिए वैसी विद्या,
जो केवल हो स्वार्थव्रती ॥
इष्ट जहाँ हो अर्थ उपार्जन,
शिक्षा का हो इष्ट जहाँ धन,
मुझे प्रिय नहीं व्यर्थ अध्ययन,
अशुद्ध पूजा, कपट आरती ॥

शिक्षा वह जो ज्ञान बढ़ाये,
मानवता का पाठ पढ़ाये,
भक्ति तृप्ति वैराग्य सिखाये,
दिव्य ज्ञान का स्रोत बहाये ॥

—श्रीअरुणकुमार सेन

भजन—दादरा

दरशन दो माँ जगत-तारिणी,
नहीं जानता पूजा का क्रम
निपट मूर्ख मैं हूँ अज्ञानी ॥
मन्त्र सदा माँ नामोच्चारण,
अर्घ्य आरती व्यर्थ अकारण
माँ सार्थक हो शरीर धारण,
पुत्र सुने तव अमृतवाणी ॥

माँ तुम तो हो सर्वमङ्गला,
दूर करो तुम विश्व की बला,
टूटे तम अज्ञान-शृंखला,
मिले प्रीति तब शान्तिदायिनी ॥

—श्रीअरुणकुमार सेन

वागीश्वरी—कावाली

उदित हुई तुम ज्योतिरूप में, माँ ! भारत-गगन में ।
प्रेम और करुणा देने, चिर मोहाच्छादित प्राण में ॥
तुम आई कल्याणी रूप में, शोक-प्रपीड़ित पृथ्वी में ।
भक्तिपुष्प खिला शतप्राणों में, तुम्हारे मंगलस्पर्श से ॥
सिद्धा हो तुम कि वा साधिका, सब सिद्धि विभूति हैं तुम्हारी,
भक्ति-मुक्ति-दायिनी शारदा, देवी भगवती नारीरूप में ॥
ब्राह्मण घर में माँ आईं, लीला करने अति दीन भाव में ।
जीवन सौंपा चरण-कमल में, रहो माँ सतत ध्यान-ज्ञान में ॥

अनुवाद—स्वामी अपूर्वानन्द

मालकोश—तेओरा

जय माँ शारदा जगत्-जननी,
चिन्मयरूपिणी भक्ति-ज्ञान प्रदायिनी ।
धर्मग्लानि-विनाशिनि विश्वमङ्गलकारिणी ॥

मातृभाव परिशोधिनि आश्रित-सन्तति-तोषिणी ।
आचण्डाल करुणारूपिणि दस्यूपरि अनुकम्पनी ॥
सकलदेव-समदर्शिनि दशमहाविद्यारूपिणी ।
प्रेमानन्द-सुवर्षिणि, दुर्बलबलदायिनी ॥
भक्ति-प्रेम-प्रदायिनि सागर-पारकरनि-तरणी ।
प्राणिमात्ररूपिणि दुर्गति-दुर्मति-नाशिनी ॥

—स्वामी अपूर्वानन्द

मिश्र जय जयन्ती—कहरवा

हरि ॐ रामकृष्ण बोल मन मोर,
शारदा रामकृष्ण नाम बोलो एक बार ।
सुधामय हरि ॐ रामकृष्ण नाम,
अन्तकाल में हरि ॐ रामकृष्ण नाम ।
तारक ब्रह्म हरि ॐ रामकृष्ण नाम ,
लेंगी तुम्हें श्रीशारदा रामकृष्ण-धाम, (में)
हो जाओगे पूर्णकाम पुलकित अपार ॥

अनुवाद—स्वामी चण्डिकानन्द

मिश्र जयजयन्ती—कहरवा

स न् स र	स ण् ध् प्	म र् ग र्	स – – स
ह रि ॐ –	रा म कृ ष्ण	बो लो म न	मो – – र
ग ग ग स	ग म म ग	र प म ग्	र ग् र स
शा र दा राम	कृ ष्ण ना म	बो लो ए क	बा – – र
स स ग म	प प प –	प धप म ग	म – – म
सु धा म य	ह रि ॐ –	रा म कृ ष्ण	ना – – म
अ न्त काल में	ह रि ॐ –	रा म कृ ष्ण	ना – – म
ता रक ब्र ह्म	ह रि ॐ –	रा म कृ ष्ण	ना – – म
ग म ग म	ग म ग म	र प म ग्	र – स –
लें गी तु म्हें	श्री शा र दा	रा म कृ ष्ण	धा – म –
प प ध प	म ग म म	र प म ग्	र ग् र स
हो जा ओ गे	पू र्ण का म	पु ल कि त	अ पा -- र

श्रीश्रीरामकृष्णध्यानम्

ध्यायेच्छ्रीरामकृष्णं परमपुरुषं सर्ववेदान्तवेद्यं ।
विष्णुं नारायणं तं मनुजततुधरं देवदेवी स्वरूपम् ।।
ध्यानस्थं चोर्ध्वनेत्रं करतलमिलितं चासने सुप्रतिष्ठम् ।
द्वन्द्वातीतं प्रसन्नं त्रिगुणविरहितं निर्गुणं ब्रह्मरूपम् ।।

श्रीश्रीसारदादेवीध्यानम्

ध्यायेच्छ्री सारदां तां प्रकृतिपरतमां ब्रह्मशक्तिस्वरूपां ।
काली-दुर्गादि-रूपैः सुरनरपूजितां विश्वमातृत्वमूर्तिम् ।।
ध्यानस्थामूर्ध्वनेत्रां करतलमिलितां व्याघ्रचर्मासनस्थां ।
देवीमून्मुक्तकेशीं सधवलवसनां ज्ञानदात्रीं प्रसन्नाम् ।।

इति स्वामिबलरामानन्दविरचितश्रीश्रीरामकृष्ण तथा श्रीश्रीसारदा देवीध्यानम् समाप्तम् ।

स्वामी अपूर्वानन्द द्वारा रचित और संकलित कतिपय संस्कृत और हिन्दी ग्रंथों की सूची

संस्कृत ग्रन्थ :

(१)	वेदमूर्तिश्रीरामकृष्णः	मूल्यम्	३-००
(२)	युगाचार्यविवेकानन्दः	मूल्यम्	३-००
(३)	विवेकानन्द-संस्कृतविद्वद्गोष्ठी— स्मारकांजलिः प्रथम भाग	मूल्यम्	२-००
(४)	... द्वितीय भाग	मूल्यम्	२-००
(५)	दिव्यरामायणम्	मूल्यम्	१५-०० १७-५०

हिन्दी ग्रन्थ :—

(१)	धर्मप्रसंग में स्वामी शिवानन्द १म भाग	मूल्य	२-३५
(२)	... ... २रा भाग	मूल्य	२-३५
(३)	मां शारदा (जीवन-चरित्र)	मूल्य	४-५०
(४)	श्री रामकृष्ण और श्री माँ	मूल्य	३-४०
(५)	युगप्रवर्तक विवेकानन्द (जीवन-चरित्र) —शतवार्षिक जयन्ती प्रकाशन	मूल्य	२-५०
(६)	कैलाश और मानसतीर्थ-यात्रा—	मूल्य	३-००
(७)	आचार्य शंकर (जीवन-चरित्र)	मूल्य	४-६०
(८)	शिवानन्द—स्मृतिसंग्रह (प्रथम भाग)	रु०	७-५०
	(द्वितीय भाग) रु० ८-५०, (तृतीय भाग)	रु०	१०-००
(९)	दिव्य रामायण—	रु०	७-००
(१०)	श्रीमद्भगवद् गीता (अन्वय, अनुवाद और श्रीरामकृष्ण देव के उपदेशों पर आधारित व्याख्या व टीका सहित)—	रु०	११-५०

प्राप्तिस्थान—

श्री रामकृष्ण आश्रम, धन्तोली, नागपुर-१२ (म० प्र०)